हमारि चिट्ठी

गढ़वाली साहित्य, समाज अर सृजन को दस्तावेज

अंक :1 वर्ष :1 जनवरी–मार्च 2005 मूल्य :10 रुप्या

चिट्ठी परिवार

सम्पादक

मदन मोहन डुकलाण

न

ट

ा

जोशी

ैंथोला

र भट्ट

ाना

ार

ाला

ासाला

न

ोगी

चेत्र

ष्ट

ये अंक मा ...

हमारि बात	: *बच्चूं निरभगि म्वरयूं भग्यान*	3
तुम्हरि बात		4
कन्हैयै कलम से -		
यात्रा वृतान्त	: *स्मृतियों का चलचित्र*	6
गीत	: *उल्यरू जिकुड़ी*	10
कविता	: *उत्तराखण्ड*	11
	कीड़ु की ब्वे	12
	उछ्यदि/डराणो	13
छिटगा	: *चिट्ठी*	14
साक्षात्कार	: *क.ला. डंडरियाल*	16
व्यंग्य	: *ठ्यकरया*	22
पुराणि कलम	: *मंगतू*	23
साहित्य	: *गोठमा*	24
किताब	: *अंज्वाळःएक कथ्य–भ.प्र. नौटियाल*	25
संस्मरण	: *हरीश जुयाल/गिरीश सुन्दरियाल/ जयपाल सिंह रावत*	29
	अर	

Lokeh] idk'kd enu ekgu Mdyk.k
}kjk
fgeky; ykd lkfgR; ,o
lLdfr fodkl VLV]
,&16] j{kkije ¼ykMij½ ikLV jk;ij
ngjknu&248008] cV idkf'kr vj
o [k.k
^le;&lk{;*]
15 Qkyr ykbu ngjknu cV efnrA

ई-मेल : chithee@rediffmail.com

वेबसाईट : www.angwal.org

क्षेत्रीय आधार

- *गिरीश सुन्दरियाल*
  गाँव – चुरेड़गाँव
  पोस्ट– जगरस्याखाल, (नौगाँवखाल)
  पौड़ी गढ़वाल – 246162
- *गणेश खुगशाल 'गणी'*
  126–*विकास मार्ग, पौड़ी गढ़वाल*
- *उर्मिल थपलियाल*
  ए–1075/3, *इन्दिरा नगर*
  लखनऊ–16 *(उत्तर प्रदेश)*
- *प्रीतम अपच्छ्याण*
  रा.उ.मा. वि.–दूनागिरी द्वाराहाट, अल्मोड़ा
- *हेमवती नन्दन भट्ट 'हेमू'*
  अमर शहीद सूर्य ग्राम, चौदह बीघा,
  मुनि की रेती, ऋषिकेश
- *भीष्म कुकरेती*
  17, *गढ़वाल दर्शन, नटवर नगर,*
  जोगेश्वरी पूर्व, मुम्बई–400060

सम्पादन–संचालन पूरी तरह अवैतनिक अर अव्यवसायिक

खास बात

'चिट्ठी' नौं
से शुरु अपणि संस्कृति–अपण
ाा साहित्य अर अपणा समाज की संवे.
दनाओं का सृजन की एक छ्वटि सि कोशिश तै
हिटदा–हिटदा आज सतरा–अठारा साल ह्वेगिन। एक
आठ पेज का फोल्डर बटे शुरु यो प्रयास आज एक त्रैमासिक
पत्रिका का रुप मा आप तक पौंछणू छ पर यीं दा एक नै रुप
मा – एक नै नाम का दगड़ – 'हमारि चिट्ठी'

ये बीच जख हम ये साल तैं 'सिंह' शताब्दी वर्ष का रुप मा मनौणा छा वखी 'खाडु लापता' जना लोकप्रिय नाटक का लिख्वार श्री ललित मोहन थपलियाल हमरा बीच नि राया, यूं द्विया महान साहित्यकारों का प्रति अपणि संवेदना अर श्रृदांजलि व्यक्त कर्ना वास्ता यूं लोगूं का व्यक्तित्व अर कृतित्व पर आधारित कुछ खास लेख 'हमारि चिट्ठी' का ये अंक मा समाहित कर्ना छवां बाकि स्तम्भ जन का तन छन।

पाठकों तैं बासन्ती पर्व 'होली' की

हार्दिक शुभकामनाएं

हमारि
चिट्ठी
गढ़वालि त्रैमासिक
गढ़वाली भाा साहित्य को समग्र विकास
एक पहल एक प्रयास

हमारि बात

संस्कृति का प्रति चितळू होण जरूरी छ

मनख्यूं को सामूहिक रुप छ समाज अर समाज की सामूहिक पच्छ्याण ही संस्कृति छ, याने संस्कृति का संरक्षण एवं सम्वर्द्धन का वास्ता सामूहिक प्रयास को हूणो जरूरी छ सामूहिक अर समेकित प्रयासों से ही हम अपणी संस्कृति जो कि हमतैं विरासत मा मिलीं, पूर्वजों की दियीं एक धरोहर छ, तैं संरक्षित रखि सकदां अर अपणी आण वळि पीढ़ि तक संवाहित करि सकदां।

आज अगर अपणी पर्वतीय संस्कृति–अपणी उत्तराखण्डी लोक संस्कृति की बात करे जावा त द्वी प्रकारै चुनौती हमरा समणी छन– लोक संस्कृति का विलुप्त हूणा की अर लोक संस्कृति का विकृत हूणा की–द्वी हि स्थिति खतरनाक छन अर जल्दी यूं समस्याओं पर ध्यान नि दिये जालो त एक विकट स्थिति हमरा समाज का समणी प्रगट ह्वे सकद।

अगर संस्कृति याने हमारि पच्छ्याण–हमारि परम्परा, हमरा रीत–रिवाज, हमारो खान–पान, वेशभूषा, गीत–संगीत आदि का हर्चण की बात करे जावा त यांमा हम लोग खुद हि जिम्मेदार छवां। हमरा समाज का चितळा न होण का वजै से अर अपणी संस्कृति का प्रति उदासीनता का कारण ही आज जख एक तरफ थड्या, चौंफला, झुमेलो, जागर जना उत्कृष्ट लोकगीतों तैं लोग बिसरदा जाणा छन वखी ढ़ोळ सागर जनी अलौकिक अर अप्रितम लोकवाद्य–विद्या हर्चण का कगार पर छ अर एक शोधपरक विषय बणीक हमरा मुखुब द्यखणी छ, इनी हमारि संस्कृति का झणि कतनै पहलू–कतनै विषय–कतनै पक्ष धीरे–धीरे विलुप्त हूंदा जाणा छन अर हमारो समाज अज्यूं तक भि चितळू नि ह्वे।

लोक–संस्कृति का संरक्षण, सम्वर्द्धन का दगड़ि आज एक हौरि समस्या जो हमरा समणी छ वो छ पर्वतीय संस्कृति को विकृतीकरण। बड़ा दुःख कि बात च कि बजारवाद अर व्यवसायिकता का दौर मा जबकि हमतै अपणी संस्कृति का कतनै महत्वपूर्ण मौलिक पहलुओं तैं खोजि कै लोगों का समणि ल्हाण चयेंद वख हम रातोंरात चमकण का चक्कर मा अपणी लोक–संस्कृति का मौलिक स्वरूप को कचूमर बणाण मा कखि पेथर नि छवां। एक द्वी उदाहरण दिये जैं त ह्वे सकद अपणा आप तैं फैमश गायक समझण वळा जणैका नाक घचाक लगि जावा पर यीं बात से क्वी इन्कार नि करि सकदु कि आज ऑडियो/वीडियो सी.डी अर कैसट आदि संचार का माध्यम से पहाड़ की संस्कृति तैं प्रदूषित कर्न वळा गीत/गाणो की कमि नी च। ये विषय पर समाज का समझदार लोगों तैं समणि आण चयेंद अर इना गीत /गाणो का गितागों तै समाज मा बहिष्कृत कर्ने जोरदार पहल करण चयेंद ताकि पहाड़ की संस्कृति की मौलिकता– जो कि यांकि सबसे बड़ी विशेषता छ, अक्षुण रै साक।

पहाड़ ऋषि–मुनियो की भूमि छ, पहाड़ गंगा–जमुना संस्कृति की उद्गम स्थली छ यीं संस्कृति की मौ. लिकता, पौराणिक अर प्राचीनता ही उत्तराखण्डी समाज की असली पच्छ्याण छ। अपणी पर्वतीय संस्कृति को संरक्षण–सम्वर्द्धन जख आज हमारी जिम्मेदारी छ वखी यीं संस्कृति तैं प्रदूषित हूण से बचाणा वास्ता कुछ

तुम्हरि बात

चिट्ठी–पत्री कु स्व. डं. स्मृति विषेशांक अभी–अभी मिले। अभी 28 पन्ना पढ़ीना–चौबीस पृश्ठ तक मन लग्यूं रै– डंडरियाल जी की याद ताजा ह्वे। पृ0 25 पर विद्वान भगवती प्रसाद नौटियाल को लेख 'अंज्वाल–एक कथ्य' पैढ़ीकी तबीयत खराब ह्वेगे। ये लेख मा जादातर पग्त्यूं मा वी बात बोलेगे जु कै बि कवि का बारा मा बोले जा सकद अर कुछ बात त बे सर पैर की भी छन ।

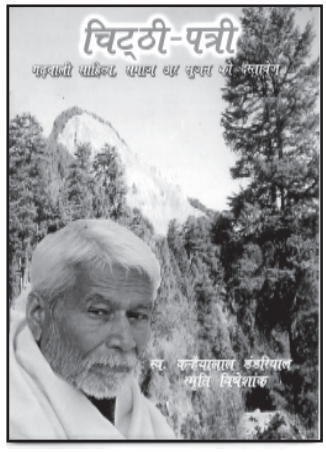

कतगै जगा मा रूकण प्वड़णू च कि क्य मतलब होलु। जन 'यूं कवितौं का चिंतन–मनन का बाद .....ध्वनित होणू च।' थैं पढ़ी दिमाग चटकण बैठ जांद–समझ मा नि आंदु कि क्या ल्यखणै रावलु। अमूर्त अर अषरीरी हवा ह्वे सकद, सौंदर्य भी, पर चित्रात्मक भी ह्वे सकद भौत सोचि कि बि समझ म् नि ऐ। 'अषरीरी' षब्द हिन्दी साहित्य मा सबसे पैलि प्रसाद जी न प्रयोग–कै सौंदर्य का संदर्भ मा, फिर रामावतार त्यागी ना अपणा एक गीत मा संबोधन करे : ओ अषरीरी पवन झकोरो – उस तक मेरा स्वर पहुँचा दो रेषम के सहलाने पर भी जिसको नींद न आई होगी। तिसरू प्रयोग विद्वान नौटियाल जी का प्रस्तुत लेख मा देखणा को मिले। लेख का पहला ही पृश्ठ का दुसरा पैराग्राफ की आखिर पंक्ति छ – ".....जीवन मूल्यों पर गहरी चोट (कटाक्ष) कन्न मा पिछनै नि छन।" हे जी साब– जीवन मूल्यों पर चोट कन्नै क्या जरूरत रा ह्वेली डंडरियाल जी थैं। एक द्वी उदाहरण द्यावदी धौं वूंकी कवितौं से

मि फिलहाल इतगै पढ़णू छौ ऐथरे चीज बादम द्यखुलु पर ये लेखन त मी भौती परेषान कै। सच ब्वन त ट्वपिलि बटे खुटौं तक यू हिन्दी लेख च अर इना लेख गढ़वळि भाशा मा नी बि ल्यखे जैन त भाशा थैं क्वी नुकसान सैत नि हो। अपणि बात थैं समझाण ाा क वास्ता इन कदु कि लेख का पैला द्वी पैराग्राफ कू गढ़वळि मा अनुवाद कै की भेजणू छौं। जु टुकड़ा अंडर लाइन कर्यां छन वू विद्वान लेखक से टिप्यां छन। दिमाग की विकट स्थिति मा अनुवाद जन नि होइ होलो

अपणा जमनै गढ़वळि कवितम कन्हैयालाल डंडरियाल अपणैं तरां क कवि रैन। इनि बि पछेणे सकींदिन कि जन–जन बुढ़ींद गेन तन–तन भितरै छपछपी उमाल अर स्वचणऽ कि किसणि म नै–नै तरां कि बुतै–जुतै कना रैन। 'क्य ब्वन्न',' कन ब्वन्न' क लैजा थैं सगोर सिखैकि वूंन चलैमान बणैकि रख्यूं रै। अंज्वाळ कु अबौ छप्यूं सरूप वूंकी चुणीं बयालीस कवितौं क दगड़ दस छ्वट्टि कविता ल्हेकि पढ़दरौं का समिणि च। यूं मद्दे जादातर कविता 1960 से 1980 क बीच ल्यखे गेन। 1978 मा गढ़भारती, नई दिल्ली ना अंज्वाळ पैली दां छापि छै। यूं कवितौं थैं पैढ़िकि, समझि कि पता चल्द कि कवि भाशा म कतगा रम्यूं च अर कखि–कखि म अपणी धर्ति कि सौणि सकल थैं कतगा जण्द–पछ्यण्द।

य बात छैं छ कि बाक गढ़वळि च, त गढ़वळि कीइ द्यखीण–दरसन वळि मुखिड़ि कि अन्वार झलकद अर बत्था गढ़वाळै छन त वखकि तसवीर उभरदिन। वूंकी कवितन जु तरंग अर थरथिरि पैदा कै, खुटा नचणकु थिरकैन वु सब अपणै बूता पर कै, कै 'छंद' अर 'सुरताल' क ऐथर हथ्यलि नि फैलै।

कविता कनी तसवीर पैदा कै सकद या बि कवि न अफ्फी सोचि अर तसवीर बि इनि खैंच जु भैर बटे चीजुकि तरां दिख्या त ना पर भितरै–भितर दिखीण ाइ बि रा। यां सै कविता की दुन्या मा इनि झलाक पैदा ह्वै जु पैलि नि छै अर जु आज बि सब्बि जगा नि दिखींदि–जन बुलींद अलगीइ क्वी बात ह्वा! पर

जबरि य बात कै थैं कटणौ जांद त इन लगद जन सचेकीइ कटणी हो अर दिखेजा त जगऽ जगम हैंसी मजाका भितर बि पैनी काट त कवितौ दगडु छ्वड़दि नी दिखीणी च।

उन्त गढ़वळि मा पौंछ्या कव्यूं कि कमी नी छ, पर अपणि संस्कृति थैं जथा मजबूती से महाकवि डंडर्यालन सींचि–संवारि, अण्थि द्यखण मा नि ऐ। यूं कवितौं मा चोट कै–कै कि या कुतगळि लगै कि अर कखि–कखि मूं भितरै सौणि सकल थैं भैर निकलणै कला से यीं तरां कि कविता कि दुन्या बणये गे जनि हौरि जगा कुजणीइ मील। कवि अपणा इनै–उनै आंखि खोलि कि द्यखणू ही नी च, चीजु थैं टटोळि कि हिलै डुलैकि परखुणू बि च। कवितौं की बांकि नजर त छै ही च संग्रै कि जादातर कविता गढ़वाळि पुराणपंथि, लकीर कि फकीरी, आंखा बूजिकि सुणणै–समझणै–बिंगणै आदतु, जाणकारि कि कमी अर हौरि बि कमि कमजोर्यूं परैं चोट मनम पिछनै नि रैंदि"

– राजेन्द्र धस्माना
जी–7, आकाशभारती अर्पाटमेन्टस
24– इन्द्रप्रस्थ विस्तार, दिल्ली–110092

सर्या चिट्ठी पत्री की कुटमदरि तैं मेरि स्यवा–सौंलि, आप गढ़वळि भाशा–साहित्य का विकास मा लग्यां छा जुगराज रयां वो सब जो अपणो कीमती समै लगैकि गढ़वळि तैं पढ़ण–ल्यखण मा अर यांतैं ऐथर बढ़ाणौ प्रयास करणा छन।

– अनिल शैलानी
गौं मेलधार पो. चौखाळ, पौड़ी गढ़वाल

चिट्ठी–पत्री कू स्व0 कन्हैयालाल डंडरियाल स्मृति विषेशांक देहरादून मा उत्तराखण्ड महोत्सव का दौरान गढ़वाळि साहित्य का स्टाल बटे खरीदण कु मौका मिले। पढ़ना बाद पता चले कि वास्त मा यो अंक एक दस्तावेज ही चा। स्व0 डंडरियाल जी का बहुआयामी व्यक्तित्व थै समझण मा ये अंक न काफी मदद करे। हालांकि वूंकी साहित्य सृजन की जानकारी मी तैं पैलि बटे भी छै, वूंकी लिखीं "अंज्वाल" पैलू भाग मिन पढ़ि चा।

वूंकी हिन्दी की कुछ कविता भी मिन पैढ़ि छै जो वूंन कैकी ब्यो क बगत पर लेखी छाई। पर ये अंक से वूंका बारम कई अतिरिक्त जानकारी भी मिले। आपकु प्रयास अपणि बोली भाशा का सन्दर्भ मा बहुत ही अच्छू च।

– वी0के0 धस्माना
सहायक जलागम प्रबन्धक, छाम टिहरी गढ़वाळ

म्यरि नजर अचानक ही चिट्ठी–पत्री का डंडरियाल जी वाला अंक पर पड़े। पन्ना पलटदु–पलटदु जब डंडरियाज जी दगड़ आपै तथा भाई सुंदरियालै खास बातचित पर पौंछ्यो त वीं बातचित मा द्वी–तीन अंष कुछ अटपटासी लगने।

ये म्यरि दृश्टि मा कै भी पत्र–पत्रिका का सम्पादक तथा लोकसभा व राज्यसभा का अध्यक्ष एक जना छन, जै प्रकार से सदन मा सांसदों द्वारा बोलीं असंवैधानिक भाशा का अंषों तैं अध्यक्ष महोदय सदनै कार्यवाही से निकाल देंदन वे ही प्रकार से पत्र–पत्रिका का सम्पादक भी प्रकाषनीय सामग्री बटी वू अंषो तैं निकाल देंद जु अवांछनीय अथवा समाज तथा साहित्यै मर्यादा से मेल नि खांदन। पर यी बातचित मा आपन कोताही बर्त दिने।

पृश्ठ 18 पर भाशा का सम्बन्ध मा डंडरियाल जी का विचार त प्रस्तुत छन पर आपौ प्रष्न जन्यो तन्नि च, वूंकी न त ये पर अपणी राय व्यक्त करीं च कि "लोग गढ़वाळि तैं भाशा नि मानदा" अर ना ही –"क्य आप गढ़वाळि तैं भाशा मानदा छैं" ये का विपरीत वूंन अन्य बातों का अतिरिक्त यू भी बोल दिने कि "बद्रीना. थै यात्रा जैं मां जनता दगड उतगा सम्पर्क नि होंदो छयो" जबकि जब बटी गढ़वाल मा चार्रि–धामों की यात्रा प्रारम्भ ह्वे ह्वेली तब बटी लेकी–मोटर सड़क का निर्माण तक अर्थात सन् 1944–45 तक जातुर्वे (यात्रीगण) हरिद्वार बटी अपणा देवप्रयागी पंडी का साथ चट्टियों पर विश्राम करदू –करदू तथा वूं ही चट्टियों पर दुकानदारों से खाणै सामग्री खरीदी फुर्ल्टी, थाली, कर्छी, भड्डू, लोट्या, गिलास आदि मांगी खाण गै भी बणौंदा छया अर रात्रि अथवा दिन मां विश्राम भी करदा छया अर ये प्रकार से चार्रि–धामों की यात्रा करी डेढ़–द्वी मैना बाद वापस हरिद्वार पौंछदा छया,

बोन्नो मतलब यो छ कि जु जातुर्वे गढ़वाल मा डेढ–द्व ी मैना बितौंदा छयां, वु यदि गढ़वाल्यों का सम्पर्क मा नि औंदों छयो त कैका सम्पर्क मा औंदौ छयों?

ये ही आधार पर त देषी अथवा विदेषी भाशा वैज्ञ. ानिकों न लेखि कि गढ़वाळी भाशा मा गुजराती, राजस्थ. ानी, मारवाड़ी तथा सिंधी भाशा का षब्द समयां छन

पृश्ठ 19 पर डंडरियाल जी न नेत्र सिंह असवाल व स्व. विनोद उनियाल तैं दिल्ली मा गढ़वाळी सा. हित्य को गढ़ गिरौणौ शडयंत्रकारी बतै। मैं ई बात तैं साफ षब्दों मा नकारदौं। किलै कि सन् 1952 (जब मैं गढ़वाल साहित्य मण्डल दिल्ली को सदस्य बणि छयो) बटी लेकर सन् 1981 (जब मिन हिमालय कला संगम, दिल्ली का अध्यक्ष पद से इस्तीफा दिने) तक दिल्ली मा गढ़वाली भाशा का साहित्य से व साहित्यकारों से जुड़ीं संस्थाओं का कार्यकलापों को चष्मदीद गवाह छौं श्री अबोध बंधु बहुगुणा से लेकी दिल्ली स्थित जथगा भी गढ़वाळी साहित्यकारों (साहित्यै ज्व भी विधा हो) तैं आप गैण सकदीं वु सौब, गढ़वाळ साहित्य मण्डल, गढ़वाळ भ्रातृ परिशद, हिमालय कला संगम व गढ़भारती से जुड़या छया। यूं संस्थाओं न यूं साहित्यकारों तैं मंच दे, प्रोत्साहित करे, मान–सम्मान दिने अर कबारि–कबारि प्रकाषनै सुविधा भी दिने, य संस्था गढ़वाळी भाशा का साहित्य तैं पनपौण वालि संस्था छै– गढ़वाळी का साहित्य व साहित्यकारों की गतिविधि की केंद्र छै।

डंडरियाल जी न गढ़भारती का अतिरिक्त उपरोक्त संस्थाओं पर कुछ भी नि बोले, जब कि दिल्ली मा सर्वप्रथम गढ़वाळ साहित्य मण्डल न वूं तैं मंच दिने और गढवाळ भ्रातृ परिशद न वूंतैं अपणा अत्याधिक लाड–प्यार नौना का समान पनपौणो अवसर प्रदान करे।

'गढ़भारती' का सम्बन्ध मा वूंकी यीं उक्ति, जन कि मिन पैलि लेखि सहमत नि छौं कि सर्वश्री नेत्र सिंह असवाल व विनोद उनियाल, कै प्रकार को शडयन्त्र करे, शडयंत्र षब्द ही अपणा आप मा अत्यधिक भ्रामक च। वूंको यो बोन्नू भी भ्रामक च कि – "ये केन्द्र तैं तयार कर्न्ना खुण हमुन आदिम तयार कैन" झपड़ होण का बाद वूंन 'गढ़भारती' को मीतैं अध्यक्ष बणै दे अफ्फु भागी गीं।

'गढ़भारती'–संस्थै स्थापना सम्भवतः श्री गणेष षर्मा षास्त्री जी की अध्यक्षता मा सन् 1977 मा ह्वे छई यीं संस्था को बणन को कारण छयो–गढ़वाल भ्रातृ परिशद को धीरू–धीरू अवसान। य संस्था गढ़वाली भाशा का साहित्य तैं कम से कम कीमत पर प्रकाषित कर्न का आधार पर बणि छै। सर्वप्रथम यींन सन् 1977 मा श्री लोकेष नवानी को काव्य–संग्रह 'फंचि' को प्रकाषन करें, सन् 1978 मा डंडरियाल जी को काव्य ग्रंथ 'अँज्वाल़' को प्रकाषन करे सन् 1980 मा, सर्वश्री ललित केषवान, चन्द्र सिंह राही, पारेष्वर गौड़, लोकेष नवानी, नेत्र सिंह असवाल, दीनदयाल बंधु जी, विनोद उनियाल अर यषवंत सिंह रावतै कविताओं को संग्रह '/k* को प्रकाषन करे येका बाद चंद्र सिंह राही की पुस्तक रमछोल, ललित केषवान की पुस्तक "खिल्दा फूल हैंसदा पता", सुदामा प्रसाद प्रेमी की पुस्तक "गैत्री की ब्वे" अर अंत मा सन् 1988 मां डंडरियाल जी की अध्यक्षता मां नेत्र सिंह असवालै पुस्तक 'ढांगा से साक्षात्कार' को प्रकाषन करे अर्थात लगभग प्रत्येक वर्श एक–एक पुस्तक छपणी रैंनं इनि संस्था को अध्यक्ष मनोनीत होण पर डंडरियाल जी ने बोलू कि 'मैं तैं बागा गिच्चा पर धारी अफु सट्टिग गैन', बहुत ही अटपटो लगे।

नाटकों का बारा मा बोन्न मां भी डंडरियाल जी न कोताही बर्त दिने।

पृश्ठ 20 पर वून बोले – "गढ़वाल़ मा टटोल..... किलैकि वूंतै अपणि भाशा से प्यार नी च, अपणा पहनावा से प्यार नी च (त्यूखा क्वी नि पैरदू अब)..... ।"

समझ मा नि औणू च कि ये जमाना मा बि जब कि कै जमाना को पाताल लोक बोले जाण वालो अमेरिका, हमारो पड़ोसी गौं बण्यूं च, डंडरियाळ जी त्यूंखा खुजौण ा रैन, क्य त्यूंखा पैरी की ही हमुन गढ़वाळि भाशा से प्यार कन्न छयो? अर जख तक त्यूखा पैन्नो प्रष्न च त आज भी नीती–माणा घाटी का गढ़वाळी, राठ का

अधिसंख्य गढ़वाळी, नेलंग अर गंगोत्री–यमनोत्री का गढ़वाली–जु भौत ही ठण्डी जगों पर रौणा छन त्यूंखा अर लव्वा पैरदन।

चिट्ठी–पत्री का प्रकाषन का सम्बन्ध मा वूंको यु कथन कि –"म्वरीं ल्हास थैं ल्हिस्वरणो जनो काम छ" (पृ. 21) अत्यधिक अकल्पनीय सोच च, ह्वे सकद कि यी सौब बात वूंन कै भावावेष मा बोल दे होन पर म्यरि आप से गुजारिष च कि 'चिट्ठी–पत्री' का औण वाला अंक मा आप यूं सब्बि बातु को निराकरण कर ल्या। नेत्र सिंह असवाल अर विनोद उनियाल शडयंत्रकारी नि छया, वूंन त 'गढ़भारती' का माध्यम से गढ़वाळी साहित्य तै पनपौण को भरसक प्रयास करे।

– भगवती प्रसाद नौटियाल
4016/डी 4 बसन्त कुंज, नई दिल्ली – 110070

चिट्ठी–पत्री को स्व. कन्हैयालाल डंडरियाल स्मृति पर विषेशांक प्राप्त ह्वे। ये सि पैलि मैं जना अभागि तैं कन्हैयालाल जी कि क्वी रचना या लेख पढ़ना कु सौभाग्य नि मिली पर नौं सुण्यू छौ। आपा द्वारा दियीं 'चिट्ठी–पत्री' का अंक पढ़ीकि छपछपी पड़िगी। डंडरियाल जी का बारा मा जु कुछ सुणी–जाण ी वेंतै व्यक्त करणा मैं मू आखर नि छन। आज सिर्फ कन्हैयालाल जी कि हि तिवारी डंडयाळि, सग्वाड़ी पत्वाड़ी न बल्कि पूरा उत्तराखण्ड़ की तिवारी डंडयाळि रोणी छ, लेखक का जीवन्त लेख न मेरा निरसा आँखा भि पणिता बणै दे। जब कन्हैया लाल जी भग्यान ह्वे तबरि त नि र्‌वे, पर लेख पढ़ी तै अपणी आँख्यू का उमाळ नि रोक्कि सक्यूँ अर दणमण रोण लग्यूँ।

आज अपणी माँ (मातृ भाशा) तै अपणा हि सामणी म्वरदा देखणा छौं, अर जु वैद्य (कन्हैयालाल डंडरियाल जी जना) भि जान्दा रयाँ, त कब्बि–कब्बि त लगद कि अब हमारी माँ (मातृभाशा) तै क्वे नि बचै सकदू, परन्तु

लोकगीत : परिभाषा अर संकलन की सम्भावना

• pUn nRr l;ky

लोकगीत वु छन जु हमारी संस्कृति–रीत रिवाज, मेला, खोलो, खान–पान, रहन–सहन लोक जीवन की झांकी तैं षब्द रूप मा प्रस्तुत करदन, लोक समाज मा यन लोकगीत प्रचलित छन जौंकु सम्बन्ध कै न कै त्रासदी, घटना सि छ। जनु कि "सतपुली मोटर"," बेलाकूची बाढ़", "बेमेल ब्योऊ", "मोटर दुर्घटना", नषाबन्दी आदि वास्तविक घटना पर अर छन्द का आधार पर अभिव्यक्त होंई छन। अर्थात् लोक–गीत वु छन जौंकु क्वी रचनाकार व्यक्तिगत न ह्वैक लोक समाज होन्द लोकगीत न लोककंठ अर लोकमुख सि उत्पन्न षब्द छन जौंकी लिखित षब्द रचना षायद ही होन्दी छ कुछ लोकगीत यन छन जौं तैं विषेश लोक–समाज ही गान्दू रचदू छौ कुछ आज प्रचलित छन कुछ प्रायः लुप्त ह्वैगीन।

लोक–गीत वु छन जौंकु क्वी रचना. कार व्यक्तिगत न ह्वैक लोक समाज होन्द लोकगीत न लोककंठ अर लोकमुख सि उत्पन्न षब्द छन जौंकी लिखित षब्द रचना षायद ही होन्दी छ कुछ लोकगीत यन छन जौं तैं विषेश लोक–समाज ही गान्दू रचदू छौ कुछ आज प्रचलित छन कुछ प्रायः लुप्त ह्वैगीन।

अर्थात् जु गीत लोक–समाज मा प्रसिद्ध ह्वैगीन लोकगीत छन अर लोकगीत वु छन जौंकू क्वी रचयिता नि होन्द। कुछ रचना यनी प्रसिद्ध होईन जौंकू लोक समाज मा अपणू स्थान बणिग्ये तथा लोकगीत का नाम सि प्रसिद्ध माण्या छन जनू कि – 'बेडु पाको बा. रामास.....' गीत पहाड़ी समाज का अलावा गैर–पहाड़ी समाज का मुख पर आज सुणनक मिल्दू, जबकि प्रस्तुत गीत का रचनाकार स्वर्गीय श्री मोहन उप्रेती छन, षायद यनु बि सब तैं मालुम नि छ।

आज जू लोकगीत लुप्त ह्वैगीन या हौणा छन वूंको कारण छ कि सही बगत पर संरक्षण अर संवद्ध न की क्वी व्यवस्था नि ह्वै। यदि आज यीं सम्भावना का बारा मा कुछ होण लू छ त भौत अबेर ह्वैग्ये। किलैकि वु लोक समाज आज लगभग समाप्त ह्वैग्ये जै सि वास्तविक, मूलरूप मा लोकगीतों कु विस्तार स्वरूप मिलि सकू। आज सबसि बड़ी चिन्ता वे विषेश वर्ग का लोक–अस्तित्व की छ जु लगभग खतम होण की कगार पर छ अर वु वर्ग छ बेडा– बेडणी (बद्दी–बद्दीण) औजी। अर्थात जब यु वर्ग समाप्त ही ह्वैग्ये त लोकगीत भी मूलरूप –षैली की दृश्टि सि दुर्लभ ह्वैगीन यदि कुछ छन वि त मूल प्रकृति–षैली विहीन छन।

यीं सम्भावना का बावत "स्वीली घाम" सि आस टिहरी जिला मा बूढ़ाकेदार क्षेत्र, पट्टी दुंगमनदार मा छ वख बेडा–बेडणी का लोकदर्षन, लोकगीत अर बेडा–बेडणी नृत्य षैली उपलब्ध छन, जख बिटि यों लोकगीत–लोकषैली कु आधुनिक तकनीकी द्व

ारा संकलन ह्वै सकदू। दुर्लभ ग्रामीण क्षेत्रों मा जैक दाना सयाणों, औजियों का माध्यम सि पूछताछ करीक सहायता मिलि सकदी जु बिचारा उमर का आखरी पड़ाव पर पौंछी ग्येन, वूंका मुख सि मूलषब्द, मूलस्वरूप, मूलधुन–षैली संकलित–संग्रहीत करि जै सकदी।

आधुनिक लोक–जीवन तैं मूल लोक–जीवन का दर्षन "तिमला सि फूल ह्वैगीन" जब हमुन वास्वविक "घ्वैड सि चांथ" छोड्याली। आज जु बि प्रयास, सार, स्याणी, गाणी होणी छन सब आडम्बर ह्वैग्यी। लोग भिन्न –2 मत्यूं का ह्वैगीन सबकी औघड़ सि खिचड़ी अलग–अलग पकणी च।

क्वी आफु तै सेर त क्वी सवा सेर बतौन्द। आज जु लोकगीत थोड़ा भौत सुण्येणा, गयेणा छन वूं पर बि खैंचा–ताणी छ, क्वी कै गीत कुमौऊ को बतौणू छ क्वी गढ़वाल, त क्वी कै गीत पौड़ी का बतौन्द त क्वी टिहरी को। गीत अर लोकगीत द्विया भिन्न प्रकृति का होन्दान गीत कु रचनाकार व्यक्ति विषेश होन्द, जबकि लोकगीतों कु रचनाकार लोक समाज होन्द, जनु कि आजकल एक चर्चा "ढोलसागर" का मूल षब्द व स्वरुप पर चलीं छ अर सैद अग्वाड़ी और चल्न कु प्रयास कुछ लोग चलौणा छन। विवाद ढ़ोल सि निकल्या मूल नाद को छ, क्वी ढोल का बोल – 'झिग झिगता', बतौन्द क्वी 'देंग देंगता' बतौन्द। मूलनाद ढोल सि "ढ" उचित समझ मा औन्द।

खैर जु बि हो निर्विवाद होण चैन्द, जु बि छ गलत होणू छ जु वास्तविकता छ वींतै क्वी कथगा नकली जामा पैराऊ नि छुपी सकेन्द। जु लोकगीत जख की षैली भाशा–भौण को छ वैकी टांग हाथ न मरोड़ीक मूलरुप मा हि प्रस्तुत करे जाण चैन्द।

आपस मा विचार–विमर्ष सौ सलाह पारस्परिक सहयोग की भावना सि मिलि जुलीक संरक्षण, सम्वद्ध र्न, संकलन, आदान–प्रदान की भावना की सख्त आवष्यकता छ, किलैकि तभी संस्कृति को उत्थान

"कुमोंक मुख्य सांस्कृतिक पर्व"

Û mek tk'kh

जतुक वैभवपूर्ण पहाड़ौ सौन्दर्य छः उन्तुकै याँ की सांस्कृतिक परम्परा, रीति–रिवाज, संस्कार, संस्कृति विषेश महत्वपूर्ण छन। कुर्मांचलक संपूर्ण सांस्कृतिक पर्व ऐतिहा. सिक, पौराणिक, वैदिक, सामाजिक, आर्थिक दृश्टिल अपण विषिश्ट स्थान धरणी। जो आज तक सांस्कृतिक धरोहर क रूप मै कुमाऊँ वासीनक लिजी चिरपारिचित छन।

हमर भारतीय परम्पराक अनुसार चैत्र बटी नई संवत्सर षुकारम्भ हुछः, तब बटीह चैतक महैण मै फूल देई मुख्य सांस्कृतिक पर्व मनाई जाँ, फुलदेई छम्मादेई, फुलसंग्रातक नामल प्रसिद्ध यो त्योहार कुमाऊँ अंचल मै काफी हर्शोल्लासक साथ संपन्न हुछः। आजक दिन बटी देली बेटी, बैणियाँ कणि भिटोली दीई जाँछि। चेत्र मैं पुर मैहण भर हरेक कुमाऊंनी परिवार मै भिटौलिक पर्व नैवद्य, पकवान, विषेश तौर पर षया बणाई जाँछ जो घर–घर मै बाँटनी।

अप्रैल मैहण मै नवरात्रि प्रारम्भ हुनी। सब लोग नवरात्रि मै ब्रत उपवास करि बेर हरेला बोनी जकें दषमी दिन सिंगल, पू बुड़, रोट इत्यादि बणे बेर पूजा अर्चना करिक काटनी, सर्वप्रथम गणेष और दयाप्तनकै चढ़ै बेर घर परिवारक सदय लोग अपण षीष मै धारण करनी सुख समृद्धिक प्रतीक हरियाला, रामनौमीक या पर्व कुमांनी परिवारोंक लिजिया विषेश महत्वपूर्ण छः।

यैक पष्चात ज्येश्ठ माह मै बटसवित्रि ज्येश्ठ दषहरा मनायी जाँछ। आजक दिन बागेष्वर, कोटेष्वर, सीतावनी महापूजन करि जाँ। यो गंगा दषहरा षुक्ल पक्षक इकादषी मैं पूडूं कुमाऊँनी लोग निर्जला ब्रत करनी दुसर दिन स्थ. ानीय षिवालय मन्दिर मै मधुर जल कुम्भ, छाता, पंखा, दान करि जल ग्रहण करनी। पौराणिक कथाक अनुसार आजक दिन गंगा अवतरण भौ समस्त संसारक कल्याणक लिजी धरती मै स्वर्ग बटि धिरे–धिरे पर्वतों, घाटियों मध्य से अवतरित भैं।

सौण मासक षुक्लपक्ष पूर्णिमा कैं पवित्र मांती जाँछ यो मास मैं जन्यो पून्योंक दिन विधान छः कि बहती हुई जल धारा मै स्नान करि गोवर, तुलसील षरीर कणि पवित्र करीक रिखि तर्पण एवं सप्त ऋशियोंक पूजन करिक नवीन यज्ञोपवीत धारण करिक नवीन यज्ञोपवीत धारण करिवेर हाथ मैं रक्षा बांधनी, कुमाऊँ मै यकै उपकर्म कुनीं इसै दिना देवीधूरा को प्रसिद्ध म्यलाक आयोजन हुछः जोकि पराम्परिक लोकगीत, नृत्य आंचलिक पकवान, वेषभूशा द्व ारा संपन्न करि जाँ।

कुमाऊँ मै "भदो" नामल प्रसिद्ध यो माह विषेश महत्वपूण र्ा पर्व क रूप में मनाई जाँछ। भाद्रपद कुमाऊँ मै विषेश महत्व धरू, भादो मास मैं सकश्ट चतुर्थीक दिन गणेष पूजन करिक तिलक लड्डू दान करि जानी। यो माह मैं जन्मअश्टमी कृश्ण ाजन्म तिथक रूप में मनाई जाँछि। गंगनाथ, थलक. `दार, कार्तिकेय, दीपादेवीक मन्दिरों में आजक दिन विषेश पूजन करनी।

कृश्ण पक्षक इकादषी अंजिविका इकादषी एवं अमावस्या कुषवर्ती अमावस्या कहलाई जाछि ये दिन ब्राहमण लोग अपणि वर्श भरिक पूजा अर्यनाक लिजि कष एकत्रित करनी भादो म हण मै हरतालिक, विरूड़, पंचिमि, नाग पंचिमी, यो दिन नाग पूजन करनी धरक दीवारन मैं नागपंचिमीक चित्र अंकित करनी।

यो महिणाक कुमाऊँ सबसे महत्पूर्ण त्यौहार पर्व छः नन्दाश्टमी। सर्वप्रथम कुमाऊँ मैं "1878" मै नन्दाश्टमी मेलाक भव्य आयोजन करिगो। तब बटि चंद्रवषीय राजाओं की वंष परम्परा मे म्यलक आयोजन जाँ जाँ महिशासुर मर्दिनीक मन्दिर छन करि जां नन्दाश्टमी बड़ी धूमधामल

संपन्न हुँछि।

दूर्वाश्टमी (इबज्योड़) यो माह मै पड़ी डोर डूब नामल प्रसिद्ध यो पर्व कुमाऊँ मै विषेश महत्वपूर्ण छः इर्वाश्टमीक दिन सैणी ब्रत करिबेर घर मै पाँच सात प्रकारक अन्नक पोटली बणै बेर पूजक यान मै यापना करना सप्तम अश्टमी "षिव पार्वती" ज्यूं की प्रतिमा बणै बेर सामूहिक पूजा अर्चना पारम्पारिक लोकगीत, नृत्य द्वारा संपन्न करनी।

कर्क संक्रान्ति हरियालाक नामल प्रसिद्ध छः खास तौर पर कुमाऊँ मै। पाँच प्रकार क अन्न जौ, मक्का, गहत, राई, उरद आदि द्विपी टोकरीन मैं भीजे बेर उनर बीच मैं "षिव पार्वती" ज्यू की मिट्टी लै मूर्ति बर्ण बेर यापना करि जे इनकैं डिकार लै कूनो जोकि देखण अति मनमोहक लगनी।

असोज संक्रान्ति यौ खतडुवाक नामल प्रसिद्ध छः। खतडुवा, संगनाथक नामल अधिक प्रसिद्ध छः एक विराट अग्नि स्तूप प्रज्जवलित करिक लाकड़ मै नवीन फल खीरा, ककड़ी, "फूल्यूंण" बाँध बेर अन्नि में लाकडल मारनी भेलों खतडुवा कहते हुए अन्नि स्तूपक चारों ओर घूमनी गीत गानी सबनकैं प्रसादक रूप मै खीरा ककड़ी बताषा बाँटनी सब लोग हँसी खुषी षीत ऋतुक स्वागत अन्नि प्रज्जवलित करिक करनी पहाड़ में कहावत लै छु तदु बटि खंताड भर जाड षुरू है जाँ।

मकर संक्रान्ति "घुघुतिया" फूल तथा उतरैणी लै कुँनी। घुघुति जनवरी माह मै अत्यंत हर्शो उल्लास द्वारा मनाई जाणि वाल पर्व कुमाऊँ विषेश महत्वपूर्ण छः आजक दिन हरेक कुमाऊँ वासी आटक घुघुति, ढ़ाल, तलवार, फूल पकवान यप मै व्यंजन तैयार करनी दूसर दिन काले कौवा कै दी बेर अपण पास पड़ौस मै वितरित करनी तब परिवार वाल ग्रहण करनी यो कुमाऊँ मै प्रसिद्ध मुख्य पर्व छः।

घुघुति पकवानक माला बणै बेर घरक बच्चोंक गल मै पैनी उमै नोट, फल बदाम, काजू इत्यादि पिरोई जानी जो देखण मै ननतिनक गल मै अत्यंत मोहक लागनी यो पर्वे में कई किस्सा कहानी जुड़ी छन जसिक धरक सेणी कूनी–

1 ले कोआ घुघुति खाले
मैकणी भली खबर सुणाले।

2 ले काले कौटा घुघुति फूलौ
मैकणी दिए दुल्हौ भलौ।

इक फूल संक्रान्ति यौ कारणल कई जाँ आजक दिन आस पासक, चेली, बेटी, देली अक्षत बुरांसक फूल बिखेरनी उनके पैस दी बेर बिदा करनी। उन्तरेणी पर्व मै पूर माह भर सूर्य, विश्णु ज्यूक पूजाक विषेश महत्व छः परम पुराण ाक अनुसार माघ स्नानक विषेश महत्वपूर्ण छः तबै कुमाऊँ अंचल एवं भारतक अन्य प्रान्तक लोग लै माघ स्नानक पुश्प अर्जित करनी।

यो अवसर पर कुमाऊँ कई स्थानों षिवालय मै विषाल म्यालक आयोजन करि जाँ। जयै सांस्कृति, पारम्परिक लोकगीत नृत्य कार्यक्रम संपन्न हुनी दूर–दूर बटि लोग म्याल देखणक लिजी ऊनी यो व्यापारिक दृश्टील लैं यो काफी समृद्धी, साजो सामन, गलिचा, दन, कम्बल, घी, पषु, ऊनी चुरके, थुल्ये म्यालाक विषेशता छन।

होली, दीवाली, दषहरा इत्यादि कुमाऊँ मुख्य सांस्कृतिक पर्व छन जो जन मानस मै मनोरंजन, हर्शोल्लास, सुख षान्ति आपसी सद्भाव स्नेह प्रेम में वृद्धि करनी। इक दुसर के आपस मे जोडनक कार्य करनी अगर यो सांस्कृतिक पर्व हमर जीवन मै नी रौ त हमर जीवन नितान्त नीरस ह्वै जाओ। यक लिजि आवष्क छः कि हमुकणि अपणी यो अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर षमाई बरे धरण पड़ली यैकी रक्षा

लेख

कुशल कलम का कलाकार स्व. भजन सिंह 'सिंह'

श्री भजन सिंह 'सिंह' जी को जन्म 21 अक्टूबर 1905 मा गौं कोटसाड़ा मा अध्यापक श्री रतन सिंह बिश्ट का घर मा ह्वे। मात्र 6 मैना की उमर मा ब्बे को स्वर्गवास ह्वेगे तब फूफू रतनी देवी न् हि लालन–पालन करे। सिंह जी की षिक्षा–दीक्षा प्राथमिक विद्यालय जाखणखाल बटे षुरू ह्वे अर हाईस्कूल त वूंन मेस्मोर मिषन स्कूल बटे करे, जीवन–संघर्श का वास्ता भजन सिंह जी तैं भी पलायन कर्न पड़े सन् 1925 मा घर बटे निकलीं लखनऊ, सीतापुर अर आखिर मा लाहौर पौंछी अर नौकरी कर्न लगींन्। द्वी साल बाद 7 अप्रैल 1927 कु रायल गढ़वाल राइफल लैन्सडाउन मा क्लर्क का पद पर भर्ती ह्वेगिन पर अंग्रेजों द्वारा भारत का ज्वानूं तैं कतनै मोर्चा अर देषों भ्यजण का कारण सन् 1945 मा श्री सिंह जी सेना मा बटे रिटायर ह्वेगिन। रिटायर हूणा का बाद भजन सिंह 'सिंह' जी सामाजिक अर राजनैतिक क्षेत्र मा सक्रिय ह्वेगिन अर पैली ग्राम प्रधान बणीन् फिर जिला परिशद् का सदस्य (1961–1970) रैन कुछ टैम वो बारहस्यू का ब्लाक प्रमुख भी रैं। 10 अक्टूबर 1996 मा सिंह जी को देहवसान ह्वेगे।

श्री भजन सिंह'सिंह' की साहित्य –साधना बचपन मा बटे ही षुरू ह्वेगे छै। सिरप 12 साल की उमर मा वूंन अपणा पहला दोहा (हिन्दी मा) की रचना करे वूंको गढ़वाळी मा लिख्यूं पैलो दोहा छ–

ग्यूं की रोटि कख मिल्द सबु, ढबड़ि रोटि भलि स्वाणि ।।

पर ठग रूठलों से भयूं! कालि कोदलि ही खाणि।।

श्री भजन सिंह 'सिंह' का लिख्यां साहित्य मा– (1) गढ़वाली लोकोक्तियाँ (संकलन) (2) गढ़वाल के कानूनी ग्रन्थ (3) कालिदास के ग्रन्थों में गढ़वाल (4) उत्तराखण्ड के वर्तमान निवासी, (5) आर्यों का आदि–निवास मध्य हिमालय (6) उत्तर और दक्षिण भारत की राश्ट्रीय–एकता आदि खास छन

हिन्दी काव्य मा (1) अमृत वर्शा (2) माँ (3) प्रेम–बन्धन (4) कन्या विक्रय (5) मेरी वीणा (6) राश्ट्रीय सिंहनाद–श्री सिंह जी प्रमुख कृति छन।

(1) सिंहनाद (गढ़वाळी) (2) बीर वधु देवकी (3) सिंह–सतसई–भजन सिंह 'सिंह' की गढ़वाली मा रचित रचनाओं मदे छन। वूंका 200 से भी जादा निबन्ध–लेख कतनै पत्र–पत्रिकाओं मा प्रकाषित हुयां छन।

यांका अलावा (1) गढ़वाली काव्य–कौमुदी (संकलन) (2) जीवन वृत्त (आत्म चरित्र) (3) मर्यादित विद्रोह के अथक साधक–भजन सिंह 'सिंह' (श्री निवास त्रिपाठी सुन्दर सिंह ध्यानी अर रमेष कुमार मिश्र द्वारा समालोचना) (4) संकटमोचन पर संकट (5) सिंह निबन्धावली (6) कतनै रचनाऐं – (अ) उत्तराखण्ड के आर्य द्रविड़ (ब) गढ़वाल के इतिहास के अस्पश्ट पृश्ठ– आदि अबि भि अप्रकाषित छन।

श्री भजन सिंह 'सिंह'जी तै वूंका साहित्यिक सामाजिक सेवाओं का वास्ता कतनै सम्मान व पुरस्कार भि दियें गेन कतनै सामाजिक अर साहित्यिक संस्थाओं न सिंह जी तै सम्मानित करे जौं मा–'वनगढ़स्यू प्रगति मण्डल', नई दिल्ली, 'पर्वतीय साहित्य सम्मेलन', रूद्रप्रयाग, 'उत्तर प्रदेष हिन्दी संस्थान', लखनऊ, 'गढ़वाल भाशा परिशद्', देहरादून, 'कुमाऊँ विष्वविद्यालय' 'जन–साहित्य लेखक मंच' कोटद्वार, 'रोटरी क्लब इण्टरनेषनल' कोटद्वार, 'उत्तराखण्ड षोध

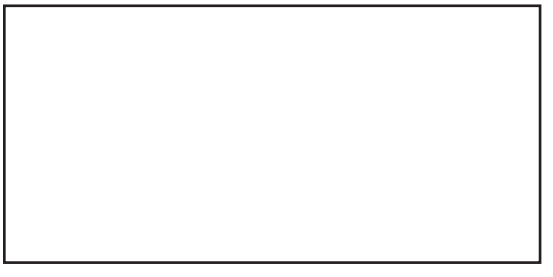

(डॉ. गिरिबाला जुयाल का शोध ग्रंथ – भजन सिंह "सिंह" – व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित अर सिंह शताब्दी समारोह समिति, देहरादून का सौजन्य से)

गढ़वालि साहित्य तैं सिंह जी की देन

Û Mk- fxfjckyk t;ky

गढ़वाळि साहित्य का उन्नयन मा श्री भजन सिंह 'सिंह' का योगदान को अनुमान यी बात से लगये सकेंद कि गढ़वाली का इतिहास का तिसरा उत्थान युग तैं "सिंह युग" ब्वले जांद। सिंह–युग का प्रेणता श्री भजन सिंह तैं वूंकी जैं रचना न् गढ़वाळि जनमानस मा पच्छ्याण दिलै वा छ–'खुदेड़ बेटी' अर जैं कृति न वूंका 'सिंह' नाम तै सार्थक करि वूंतै गढ़वळि कवि की पंगत मा अगाड़ी ल्हेकि खड़ो करे वा छ– 'सिंहनाद'। 'सिंहनाद' गढ़वळि भाशा की इतना उत्कृश्ट स्वाणी अर सुन्दर रचनाओं को संकलन छ कि यीं काव्यकृति को आनन्द ल्हेणा वास्ता कतनै गढ़वाळि अर गैर–गढ़वाळि काव्य–रसिकों तैं गढ़वाळि सीखण पड़े। सिंहनाद कि रचना से पैलि सिंह जी गढ़वाळि मा ना बल्कि हिन्दी मा ही लिखदा छया।

गढ़वाळि भाशा मा लिखणा का वास्ता श्री 'सिंह' जी तै गढ़वाळि का संगीत–तत्व, नृत्य–तत्व व वेकी प्राचीनता अर वेका कतनै भेद–विभेद आदि–भाशायी पक्षों पर चिन्तन मनन अर षोध कर्न पड़े ये कारण वो अनायास ही गढ़वाळि भाशा का विकास का बाटा पर हिटण बैठगिन, सिंहनाद की भू. मिका का रूप मा वूंको बड़ो भारि षोधपरक लेख–'x<okyh Hkk"kk vkj lkfgR;* अर "ykd lkfgR;ß भौत ही असल लेख छन। ये लेख मा गढ़वाली का षब्द सौन्दर्य षीर्शक से ठेट गढ़वालि षब्दूं की अर्थ विषिश्टता अर भाव–व्यापकता को जो विष्लेशण वूंन प्रस्तुत करे वो गढ़वाली भाशा का षब्द भण्डार की विपुलता को प्रमाण छ। ये प्रकार सिंह जी गढ़वाली भाशा को भाशायी अध्ययन अर व्यवहारिकता का धरातल पर वेको काव्य मा प्रणयन–दगड़ै–दगड़ कर्ना रैन। वूंन गढ़वाळि का लगभग 85 इना षब्दू को जिक्र करे–जनकि 'खुद', 'कतमत' टैणि, स्याणि आदि जौंकी सूक्ष्म भावाभिव्यक्ति तैं विष्लेशित कर्ना वास्ता एक लेख भी कम पोड़ि जावा, वो गढ़वाळि का आंचलिक षब्दूं को हिन्दी मा प्रयोग कर्न चांदा छा वूंन कतनै षैलीगत प्रयोग भी अपणी रचनाओं मा करीं अर गढ़वाळि तै एक नै अन्वार दिने।

गढ़वाळि मा 'सिंह सतसई' की रचना करि वूंन 'सतसई परम्परा' को गढ़वाळि मा अनोखो प्रयोग करे। वूंकी प्रयोग धर्मिता का कारण ही डॉ0 पार्थ सारथि डबराल न् वूतैं 'काव्य की प्रयोगषाला' बोले। गढ़वाळि जनी विकास मान भाशा मा दोहों का प्रयोग का दगड़ 'सिंह सतसई' की रचनाएं सिंह जी की विलक्षण काव्य कौषल की परिचायक छन। सिंह जी की सतसई की एक–एक सूक्ति व्याख्या का वास्ता एक–एक ग्रन्थ की सामर्थ रखद, उदाहरण का वास्ता कुछ दोहा काफी छन –

तू छै महासमुद्र प्रभु, मी समुद्र की बूंद।
पर वी षक्ति च बूंद पर जो समुद्र पर हूंद।
कब कख कनु अर कैन या रचना रचे महान।
वे भि अनाम अकाम तै यांकु हो न हो ज्ञान।

क्रान्ति श्री भजन सिंह 'सिंह' जी की रचना को केन्द्र बिन्दु हूँदो छयो। वा चाहें वैचारिक क्रान्ति हो सामा. जिक क्रान्ति हो, साहित्यिक अर भाशायी क्रान्ति हो या काव्य–षिल्प सम्बन्धी क्रान्ति हो, एक रसता अर जड़ता वूंतै पसन्द नि छै। इलै वो जड़ता वाळि परम्पराओं अर विवेकषून्य मान्यताओं का घोर विरोधी छया इलै वूंका साहित्य का समीक्षकों न वूंतै कबि उत्तराखण्ड का कबीर त कबि समग्र क्रान्ति का अग्रदूत की संज्ञा दिने, बोले जांद

"लीक लीक गाड़ी चले लीक हि चले पूत।
लीक छाड़ि तीनों चले षायर, सिंह, सपूत।"

फिर भजन सिंह जी लीक छोड़ि किलै नि चलदा वो त षायर सिंह अर सूपत को एक रूप छया। वूंन साहित्य मा लीक से हटीकै इना प्रतिमाओं की सृश्टि कैरि जो दोहो की तरां "देखण में छोटे लगे घात करे गम्भीर" जना प्रभावी छन, वूंका साहित्य मा कुछ इना पात्र जन कि 'लूथी सिंह', 'सल्लि ज्योरू' मिंढको नेता', 'कुसगोरि कज्याण' जौंका माध्यम से वो कटु से कटु सच तै सौंगू कै बतैं देंदा छया।

श्री भजन सिंह 'सिंह जी' न् अपणा सृजित साहित्य तैं भविश्या का वास्ता उदाहरण बणाकै गढ़वाळि साहित्य तैं सुनिष्चित दिषा दिये। कतनै निबन्धों कि रचना करि वूंन गढ़वाळि भाशा का विकास अर संवर्द्धन का वास्ता निरन्त साहित्यिक वातावरण बणयूं रखे। ये निबन्ध कतनै पत्र–पत्रिकाओं मा प्रकाषित हूणा रैंद छया। इना कुछ निबन्ध छन– गढ़वाळी लोक साहित्य, गढ़वाळि भाशा और साहित्य, गढ़वाळी षब्द समीक्षा, गढ़वाळि षब्दकोश, लोक

संस्मरण

मगनमस्त सिपै कवि भजन सिंह जी

Û Mk- mek'kdj Fkify;ky ^len'kh*

अंग्रेजों का जमाना लिख्वार मगनमस्त सिपै रैन, पर तौन बन्दूक छोड़िक अपणि कलम तैं बन्दूक बणौंण अच्छो समझि, अर इलै हि तौंते लोग सीधो–सीधो 'सिंह जी'करिकी ही जाणदा छ्या। बात सन् 1958–59 कि होली मि तब पौड़ी मा रहन्दो छ्यो, मेरा पिता पण्डित नारायणदत्त जी का दगड़े तौंको मिलणूं बैठणों छ्यो सो द्वी–चार दिन मा एक सरबट वो मेरा पिताजी का धोरा पौड़ी श्री नारायण निवास मा आईक गप्प षप्प लगौंदा छा, मि तौंकि बातों तै टक लगेकि सुणदो छ्यो त बगछट्ट मन ह्वे जांद छ्यो किलै कि वूंकी छ्वि हि इना ढंग की होन्दि छै कि तड़तड़ा घाम मा मोडा मा बैठिक "सिंह जी" सब्बि धारियों की छ्वी छलवट्टी अर पाखणों मा पुट लगै कि जन्नी लगौंदा छया कि पोटिगि मा हंसगोला पोड़दा–छोड़दा दर्द ह्वे जांदो छ्यो। सी अफ्फू त कम हँसदा छा, पर तोंकी बातों सुणि हर क्वी लोट–पोट ह्वे जांदो छ्यों।

मिन तै जमाना मा एक गढ़वाली कविता बणै छई– "सनक्वालि" अर सब से पैले "सिंह जी" तै सुणाये मै तौंते बड़ा जी बोलदो छ्यो जन्नी तौन देखे त बोले– षाबास बेटा खूब लिख, अच्छी षुरूआत छ। बस मेरो हौसलो बुल. न्दी पर छ्यो ~~मैं अपणा सौंजड़्यो तैं अपणि~~ रचना सुणौदो अर बोलदो यीं कविता तै गीत बोलिक "सिंह जी" न मेरी पीठ थपथपाई।

मेरी बड़ी माँ जी श्रीमती षकुन्तला थपलियाल जिला परिशद् गढ़वाल की मैम्बर छई अक्सर जब माँ व दुर्गी दीदी जिला का दौरा पर रहन्दी त वूं दगड़े मैं भि जान्दो छ्यो।

तख 'सिंह जी' जू भी जिलापरिशद् का मैम्बर छ्या से मुलाकात होई जांदी रै। अर इन 'सिंह जी' का आर्षीवाद से मै भि छोटी–छोटी रचना गढ़वाली, क्या हिन्दी मां भी बणौणं लग्यो। अर तौ कवितौ तै जब 'सिंह जी' बांचदा त बोलदा षाबाष खूब लिखणि छै तौन हि पैले–पैले मीतैं कवि सम्मेलनों मा बुलौंण कू मैरू नौ जगा–जगा भेजे। पैले कवि सम्मेलन टिहरी मा विकास प्रदर्षनी मा जैते कैप्टन षूरवीर सिंह पंवार व महावीर प्रसाद गैरोला न आयोजित करवायो छ्यो। मेरो गीत "आज पण्डौं नाचला" तख कवियों का बीच खुब सराहे गये, उन त "सिंह जी" जख इतिहास मा काफी दिलचस्पी रखदा छ्या वख वो 'आर्यसमाजी' होन्दा ह्वे भि देवी–दैवतौं की पुजै मा कैको मन नि दुखो, क्वी टीका टिप्पणी भि नि करदा छा।

पौड़ी गढ़वाल जिला मा पट्टी सितोनस्यूँ का कोटसाड़ा गौं बटिन वो सुबेर कल्यो खैकि पैदल हि पौड़ी कू पैटि जांदा छा– वूंका दगड़े होंदा छा फलस्वाड़ी का ज्योतिशचार्य गोविन्दराम जी 'भट्ट' देवल गौं का वकील उप्रेती जी पैदल रास्ता मा गप्प–षप्प लगौंदा वो इनों सी किस्सा छेड़ी देन्दा छया कि वो सारो रास्ता कब तै ह्वेगे पता भि नि होन्दो छ्यों कि कब पौड़ी आये।

उन वूंको लाणो पहनणू भि सादो ही जीवन पर्यन्त रहे। बन्दगला को कालो कोट, किस्तीनुमा टोपी, गरम पैन्ट, गरम मफलर जख वूंकी ह्यूँद की पोषाख होन्दी छै, अर गर्मी मा कुर्त्ता, पैजामा व जवाहरकट का सात सरज की किस्तीनुमा टोपी होन्दी छै।

मिन वूं दगड़े कथगै कवि सम्मेलनों मां वूंकी अध्यक्षता मा कविता बांचिन, सच माना त वो गल्ती सुधार कवि भि छा त एक उच्चकोटि का साहित्यकार भि छा जब लालबह. ादुर षास्त्री की ताषकन्द मा मृत्यु होई छई त उबारे वूंकी एक हिन्दी कविता "भारत में तो जीत गये थे ताषकन्द में हार गये" काफी चर्चित रहे इनै वूंकी 'सिंह–सूक्ति', 'माखों की महिमा' कविता राजनैतिक व्यंग की काफी फरमाईस कवि सम्मेलनों मा रैन्दी छई। वख ही वूंका लगोंट्या दोस्त–सिराला का 'पतझड़' काव्य संग्रह का रचियता कवि

भगवती चरण षर्मा 'निर्मोही' छया जू भि – कवि सम्मेलनों मा रंगत निकाल की रखदा छया। यो समझा कि जब कवि सम्मेलनों मा यूं लोगों जोड़ी रैन्दी छै त कवि सम्मेलन सफल होई जान्दो छयो।

मि परमश्रद्धेय गोलोकवासी 'सिंह जी' तैं अपणि श्रद्ध ांजली वूंकी षताब्दी वर्श की बेला मा देकी पित्र कवि से यू हि अभिलाशा करदो कि सि हम सब्बि कवियों–लिख्वारों तैं रचनात्मक ढंग की कवितौं–लेखों तै लेखण की प्रेरण ा देवन, ताकि गढ़साहित्य को रसोस्वादन भावी पीढ़ी भि भलीभांति करि सको। गढ़वाली साहित्य का अपणा जमाना का अच्छा लिख्वार साहित्यकार कवि 'सिंह जी' न सदैव समाज हित मा कलम चलाये, वूंका जमाना का कवियों मा छया चट्टवा पीपल का मुरलीधर सती 'गढ़कवि' जू "सिंह जी" का सिंहनाद का सबसे बड़ा प्रषंसक रैहिन। चमोली जनपद का लदोली का गढ़वाली साहित्य का सम्पोषक सतेष्वर प्रसाद आजाद जी न त जब कभि भि–कखि भि कवि सम्मेलन मा संचालन करि होलो त वो सिंह सुक्तियों का पुट तैं सदैव हर कवि का कविता का बाद सुणदौ रैन।

गढ़वलि कबीर 'श्री भजन सिंह 'सिंह'

Û oh.kkik.kh tk"kh

बात छ 18 नवम्बर सन् 2004 की। मैं पारिवारिक मांगण उत्सव मा वसन्त बिहार छयो वख मेरा वास्ता श्रीमती रेखा कुकरेती को फोन आए कि बंगलोर बिटिन क्वी वयोवृद्ध सज्जन देहरादून आयां छन अर वो तुम तैं मिलण चांहदन। मिन नौं पूछे त रेखा नऽ बताए श्री चक्रध र नैथानी, वो आज ही बंगलौर वापिस जाणा छन। मैरू कणसु बेटा बंगलौर एयरफोर्स मा स्वार्ड्रन लीडर का पद पर नियुक्त छ (आजकल एच.ए.एल. मा) मिन अन्दाज लगाए कि षायद वे तैं भेंट करी क्वी परिचित ऐ होलो, कु ह्वे सकद? मैं तुरंत दौड़ि की धामावाला बजार पौंछ्यू अर प्रतिष्ठित वैद्य स्व. सोहनलाल कुकरेती जी की पुत्रवधू का घर अतिथि सज्जन का दर्षन करन कू सौभाग्य प्राप्त ह्वे। लम्बी कदकाठी गेंहुआ रंग, स्वस्थ हृष्ट–पुष्ट, बिना चष्मा का वूं सज्जन तैं मिन सेवा लगे। वूंन आषिर्वाद दे।

वो साहित्य प्रेमी सज्जन बोन्न बैठिने कि मेरू बेटा दिनेष बंगलौर (H.A.L.) मां रहंद और मैं भी वेका दगड़ी वख ही रहंदू। वेन कखि बिटिन एक गढ़वाली काव्य संग्रह ल्है कि मेरा हाथ पर धारी, संग्रह कु नौं छौ "पिठै पैरालो बुराँस" बंगलौर मा तऽ लोग कन्नड़ अर अंग्रेजी का अलावा क्वी हिन्दी बि क्वे नि बोलि जाण्दान, गढ़वळि कैन पुछण? वेन बोले "मैं तो गढ़वाळी नहीं जानता षायद मेरे पिता जी इसे पढ़ सकें"। अर मिन यीं कितब्या पन्ना हरकै फरकै देखी समर्पण पृश्ठ पर सुण्यूं–पछ्यणूं नौं स्व. चक्रध र बहुगुणा पढ़ें त लेखिका तैं मिलनै इच्छा ह्वे तब्बि मिन बेटी तुमतैं यख बुलाएं। गढ़वलि मा बोन्न बच्यौण मौका त मैं बि नि मिले मैं सर्विस मा भैरी रह्यू पर गढ़वलि पुरखौ कि भाषा छ, मैंतै बि प्यारी छ बंगलौर जना विदेष मा यीं किताब पढ़ी मैं फिर से गढ़वळि दगड़ि जुड़नौ मौका मिले। फिर बयानवे वर्षा श्री नैथनी जीन अपणु संस्मरण सुणैने मैतैं बुलेंद मोति मिलिगैन– "एक बार सन् 1936 मा पौड़ी मा गढ़वळि कवि सम्मेलन ह्वे। कवि सम्मेलन का मुख्य अतिथि छया तत्कालीन अंग्रेज डिप्टि कमिष्नर मि. पी. मैसन, स्व. श्री तारादत्त गैरोला की अध्यक्षता मा कवि सम्मेलन सम्पन्न ह्वे। वे कवि सम्मेलन मा तत्कालीन प्रतिष्ठित कवि अयां छा। श्री भजन सिंह 'सिंह' न एक गीत सुणाए "सात समुंदर पार छ जाणू ब्वे, जाज मा जौलु कि ना?" भजन सिंह जी कवि का अलावा एक सुन्दर गायक बि छा। वे गीत सुणि की कमिष्नर साहब की पत्नि श्रीमती पी. मैसन तर–तर–तर आँसु ढोळि रोण बैठगि।

नैथानी जी न फिर बताए कि इलाहाबाद मा रोज सुबेर चार बजे उठी घुमणू जाणु मेरि अर भजन सिंह जी कि दिनचर्या मा षामिल छौ। भजन सिंह जी दौड़दा–दौड़दा फाकामऊ की तरपां जांदि दौ पुल पर बैठि गीत गुणगुण गौंदा छा, भौण भौत सुरिली अर करुणरस मा सराबोर रैंदि छै। बाटा हिटदा लोग खड़ा ह्वे कि बड़ि तन्मयता का साथ सुणदा छया वखमूं मल्लाह ऐकि भजन सिंह जी तैं पुछदा छा कि "बाबू जी आप इन क्या गाणा रंदन कखि आत्महत्या करनौ बिचार त नी छ?" भजन सिंह जी कू जवाब छयो "भलो ठन्डो बथौं चलनू छ, वातावरण भौत सुन्दर छ ये बाना मेरो यखमूं बैठी गाणो मन बोलद।" भजन सिंह जी कि भौण मा इतनी खुद अर करुणा छै कि ब्वे षब्द की सार्थकता अपढ़े का समझ मा बि ऐ जांदि छै। यो मार्मिक प्रसंग छ उन्नीसवी षताब्दी का पूर्वाद्ध को। हम आज यी बातों अन्दाज भली कि लगैं सकदां कि प्रयाग मा प्रषिक्षण हेतु प्रवासी भजन सिंह 'सिंह' जी का ह्रदय मा एक तरफ त देषभक्ति कि भावना अर दुसरी तरफ अपणि लोकभाषा अर लोक संस्कृति कु प्रेम छयो। जैसे षत्रुविजय कु बन्दूक वीरता से चले त लोकमानस विजय कु लेखनी भी निरंतर चलनी रै। षस्त्र व षास्त्र द्वियूं पर बराबर स्वामित्व छयों 'सिंह' जी का हमरा घर स्व. बाबूजी का पास तत्कालीन गढ़वळि भाषा की किताब रैंदि छै लोगों कि भेंट मा दियी बि। वे समय मा परिजन आपस मा वूंकी रचनौं कि चर्चा करी खूब मनोरंजन बि करदा छा, खास कर 'कुसगोरि कज्याण'। खुदेड़ गीत मिन बि भौत गुनगुनाए, पहाड़ की नारी की व्यथा छिपी छै ये गीत मा 'मेरि जिकुड़ि मा ब्वे कुयेड़ि सि लौंकी' एक दम अन्तःस्तल स्पर्ष करद यो गीत। कुसगोरि कज्याण की भाषा पर प्रो. षम्भू प्रसाद बहुगुणा न आपत्ति भी करी छै। ये प्रसंगौ उल्लेख स्वयं अपणि पुस्तक सिंहनाद मा सिंह जी का कर्‌यूं छ।

श्री भजन सिंह जी का बारा मा वरिष्ठ पत्रकार श्री पीताम्बर देवरानी जी न् "राष्ट्रीय सिंहनाद" की भूमिका मा लिख्यूं छ, "सिंह" जी मयार्दित विद्रोह का कवि छन विषम

से विषम परिस्थित्यूँ मा बि वूंन अपणा सिंह सिद्धान्तों अर आदर्शों दगड़ि कबि समझौता नि करे। धार्मिक कहरता, अंधविष्वास, रूढ़िवादिता, कन्या विक्रय, छुआछूत, दहेज प्रथा, घूसखोरी, नारी षोषण जनि कुरीत्यों पर सिंह जी न कबीरै तरौं करारि चोट करी अपणा कवि धर्म तैं निष्ठा अर ईमानदारी से निभै।"

गढ़वळि अर हिन्दी का प्रसिद्ध साहित्यकार श्री भजन सिंह को जन्म 29 अक्टूबर सन् 1905 मा सितोनस्यूं पट्टी का कोटसाड़ा गौं पौड़ि, गढ़वाळ मा ह्वे। श्री भजन सिंह जी तैं अपणा विद्वान पिता रतन सिंह जी से साहित्य अर कविता कु गुण विरासत मा मिली छयो। श्री भजन सिंह जी अपणा विद्यार्थी जीवन का दिनु मा आर्य समाज की सुधार अर राष्ट्रवादी विचारधारा से विषेष प्रभावित रैने। भारत का स्वंतत्रता संग्राम मा श्री भजन सिंह को अप्रतिम योगदान रै। सन् 1929 से 1945 तक भारतीय सैनिको का बीच रैकि वूंतै राष्ट्र प्रेम का वास्ता उत्प्रेरित करदा रैन।

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन की पोथि 'वीर चन्द्र सिंह गढ़वाळी' मा उल्लेख छ कि, सुविख्यात ऐतिहासिक पेषावर काण्ड का नायक चन्द्र सिंह गढ़वाली का मुख्य प्रेरणास्रोत अर वैचारिक गुरु श्री भजन सिंह जी ही छया। गढ़वाल राइफल मा हवलदार का पद पर नियुक्त भजन सिंह आर्य समाज की विचारधारा से उत्प्रेरित क्रान्तिकारी साहित्य पढ़ना रैने। ब्रिटिष षासन काल मा कति बंधनो का बावजूद बि आपै साहित्य साधना जारी रै।

दूर–दूर का गौं–गवड़ौं मा 'सिंह' जी को साहित्य गढ़वाल मा राष्ट्रीय चेतना कु संचार कन्नू रै। एक तरफ सिंह जी राष्ट्रीय चेतना कु प्रसार करदा जनता कु मनोबल बढ़ौंदा, हैंकि तरफ सामाजिक बुरैयूँ अर कुरीत्यूँ पर बि कड़ो प्रहार करदा रैन। ये ही कारण श्री भजन सिंह जी तैं लोगो न 'आधुनिक कबीर अर "गढ़वळि कबिरै" संज्ञा प्रदान करे।

श्री भजन सिंह जी को अपणा काव्य मा गढ़वाल का संघर्ष भरयां अर असौंगा जीवन कू बड़ी बारीकी से चित्रण कर्‌यू छ। अपणि वैचारिक ऊर्जा से श्री भजन सिंह जी स्वतंत्रता संग्राम तै गतिषील बणौणा रैने। पेषावर काण्ड का अमर सैनिक 'वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली' का ड्रिल मास्टर होण कू गौरव बि आप तैं मिले। आप जगत कि अर समाज की सब्बि घटनौं कि पूरी जानकारी श्री चन्द्र सिंह गढ़वाली तैं समय–समय पर देन्दा रहंदा छया अर पेषावर काण्ड कि रणनीति मा आपको पूरो सहयोग छयो।

'सिंह सतसई' मा श्री भजन सिंह जी लेखक को वक्तव्य मा उल्लेख करदन, "मि राष्ट्रीय एकता का वास्ता राष्ट्रभाषा हिन्दी को समर्थक छंऊ। म्यरो सन् 1929 मा प्रथम हिन्दी मुक्तक 'अमृत वर्षा',' मेरी वीणा', 'कन्या विक्रय' तथा खण्डकाव्य 'माँ और प्रेम बंधन' आदि कविता, पुस्तक हिन्दी मा ही छन। परन्तु म्यरा दगड़्यों न बोले कि हमारा गढ़वाल कि सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक स्थिति इनी दयनीय च कि वींका सुधार का वास्ता हमतैं अपड़ि बोलि मा इनि रचना करणि चैंदन जौं तैं हमरा गढ़वाल का सब छोटा–बड़ा स्त्री–पुरुष अच्छी तरह समझि सकुन।"

अपणि प्रथम रचना 'सिंहनाद' का विषय मा आप बा. लदन। "वे जमाना का उर्दू मा गज़ल, कव्वाली, बहरे तवील खूब प्रचलित छै। आर्य समाज प्रचारक गज़ल कव्वाल्यूं से सामाजिक कुरीत्यूं एवं अन्धविष्वास का विरूद्ध जनता तैं मंत्रमुग्ध करी देन्दा छा। मिन भी सोचे गढ़वळि गीतू मा जु अभि तक डौंर–थकुलि, पर ही फिट छन, अब कुछ इनु सामयिक परिवर्तन हूंण चैंद जु गीत नवीन वाद्य यन्त्रों का साथ सभा–समाज मा सफलता पूर्वक प्रसारित ह्वै सकून। वे उद्देष्य कि पूर्ति का वास्ता लगभग 26–29 छन्द मा 'सिंहनाद' गढ़वळि मा म्यरि प्रथम रचना च।"

परिवर्तन कुछ लोगों तैं खटकि परन्तु 'गढ़वलि कबीर' भजन सिंह कु नयूं प्रयोग खूब पसंद करेगी। परम संस्कृत विद्वान स्व. डा. पार्थ सारथि डबराल न "सतसई परंपरा का सिंहद्वार" प्राक्कथन मा उल्लेख कर्‌यूं च" सिंह जी की नवीन कृति 'सिंह सतसई' मेरे सामने है सिंह स्वयं एक संस्थापित व्यक्तित्व है। एक युगबोध का परिचायक रूप है, गढ़वाली साहित्य के दो मील पत्थरों की एक गंगा तटीय गीत गूँजों से अनुपूरा समतल दूरी है। पर्वतों की वह उड़ान है। जिसके बाद फिर आकाष ही अपनी सीमा के निर्धारण की बात सोचता है। 'सिंह' क्या नही–सब कुछ है।

"सिंह जी का सन् 1930–31 में रचित 'सिंहनाद' गढ़वाली काव्ययात्रा का मार्गस्य यष कलषित मंदिर है। गढ़वाली साहित्य का प्रषस्त मार्ग यहीं से अपना 'अथ' पकड़ता है। आगे अनन्त पथ है।" श्री अबोध बन्धु बहुगुणा गढ़वाली का वरिष्ठ साहित्यकार न 'सिंह' जी का कार्यकाल

पुराणि कलम

'सिंह' जी की रचनाओं का कुछ खास अंश

(यु साल हम "खुदेड़ बेटी" जना लोकप्रिय गीत का रचनाकार स्व. भजन सिंह "सिंह" जी का शताब्दी वर्ष का रूप मा मनौणा छा। प्रस्तुत छन मा वूंकी रचनाओं का कुछ खास अंश – सं)

'कविता'–सिंह सतसई

कविता छन्दोवद्ध च, नाद–ब्रह्म संगीत।
कविता अर संगीत की, विदित विष्व मा प्रीत

जब क्वी कविता छप्द तो, कर्दन बडै अनेक
छप्द च कविता–ग्रन्थ तो, ग्राहम मिल्द न एक।

छया प्रषंसक बहुत म्यरा कविता प्रेमी दिल
बिल मां लुकिने भेजि मिन, जब किताब को बिल।

नीति सूक्त
जब तक छौ मनखी बच्यूं, वेका निकट नि जाण
जब मरि–मिटिगे वे को अब पिण्ड पूजि क्या पाण

गलती उं से होंद कभी जो कर्दन कुछ काम
ऊंसे गलती होण क्या जौ कुच काम हराम।

सोचा भलु बोला भलु, करा सदा षुभ काम
षुद्ध च मन वच कर्म तो जप–तप व्यर्थ तमाम।

बढ़पन बैर–विरोध, बैर–विरोध तमाम
होन्द प्रेम से सफल पर ऽ षीघ्र कठिन भी काम

एक–एक से छन बण्यां, कुटुम व देष अनेक
किलै नि सुधरे देष यदि, सुधरो इख हर एक।

अध्यात्म और वैराग्य
चलि गैने साथी कई, कब चल घूं क्या ठीक
यम की झलक जरा–जरा औंद नजीक–नजीक

जरा–जरा करणी च जरा नस–नस मां विश व्याप्त
कुजणि कखमु जीवन–कथा, होन्द अपूर्ण समाप्त।

जब दुख न हो, न षोक हो, न ता कैकू कवी रोग
सुखी रहण तब हमन जब सुखी रहनु सब लोग।

हताषा – ('सिंह सतसई'– आत्म सूक्त)

रयूं न धन लोलुप कभी, करे न पद की खोज।
पेषी कर पेषी रहे, पलटन मा हर रोज।
अंग्रेजों का भक्त सब, बणिने अफसर लोग।
रयूं सिपै को सिपै मी, नि छौ भाग्य पद–भाग।

प्रजातन्त्र'– ('सिंह सतसई')

प्रजातन्त्र मा मान्य च, बहुमत की आवाज।
कर्द अल्प संख्यक मगर, इख बहुमत पर राज।
जैसे वोट नि मिल्दि यूं, वो अपडों भी गैर।
मेल च मुस्लिम लीग से, जनसंघयू से बैर।

व्यथा –('सिंहनाद' 'खुदेड़ बेटी'–गीत जो लोकगीत बणि गे)

बौड़ि–बौड़ि ऐगे ब्वैं, देख! पूश मैना।
गौं कि बेटी ब्वारी ब्वै! मैत आई गैना।।
मैतुड़ा बुलालि ब्वै! बोई होलि जौं की।
मेरी जिकुड़ी मा ब्वै! कुएड़ी सी लौंकी।।

आज का रामराज – ('सिंहनाद')

जो प्रजातंत्र सरकार प्रजा को करिकी सब आचरण नाष।
इख दारू पिलै–पिलै की, अपणो करणी च आर्थिक विक. ास।।
इनि पतित अर्थ लोलुप बणि वीं से रखण क्या कै न आष।
ये गांधीवादी भूलि गैनी, गांधीजी की सब बात आज।।
क्या यी च हमारो रामराज?

'सार–तार' – ('सिंहनाद')

विंगणू छौं यूं की सार–तार!
मंत्री जी तखा औणा छन, छूटे दिल्ली से एक तार।।
ऊं कू चैदन बस पड़ौ–पड़ौ पर, सब डांडी डोला तयार।
तब से रिटणा छन चख्डी सी, चिन्तित डिप्टी–तहसीलदा
'भ्रश्टाचार' ('सिंहनाद' – बिगणो छौं यू की सार–तार)

क्वी माखी घुलणी च हाथयूं। ल्हेणी भी नी लोली डक. ार।
देखणा छन सब नेता–फेता, फुन्द्या–फुटलिंग धर्मावता. र।।
कनु घुल या माखी हाथ्यूं? करणी नी क्वी नेता विचार।
क्वी हाथी घुलणू चऽमाखी, होणू च यूं कू भयंकार।
कनु घुले सल इतनो माखो! लोला हाथिन देखा! द यार।।

गीत

चुप च यू गौं चुप

Û georh unu Hkê ^ger*

चुप च यू गौं चुप च स्यू गौं
केकू तैं यू मौंन लेयूं
मैबि कै बच्याणु छौं
जब मनखि यख क्वी नि रयूं।

झणि कैं आस म गैंन
कुज्यणि कै ठगाण म ऐन
झणि कन औडळ आयि
जैनं घराट फराट सोरिन
बगिक, ठंगरा डाळौं सारू नि रयूं।
चुप च...

रौंस रौंत्यळि कांठ्यू म
सबि दौड़ि गैन देष
भकल्वण्यू म अकळा मनखि
बिसरि गैन मुल्क देष
कुकर बिरळा सबुन यख मुक लुकायूं।
चुप च ....

गौड़्यूं कु निलाम कै गेन
भैंस्यूं तैं बणजरौं देगेन
बखर्यूं बांटि चट्ट चटगै
पुंगड़्यूं तैं अदेळ देगेन
तिबार्यूं म यकुलांस पसर्यूं।
चुप च.......................................

ह्वेगे त्रास- ह्वेगे त्रास

Û jkd'k Hkê

ह्वेगे त्रास– ह्वेगे त्रास – ह्वेगे त्रास
यूँ पहाड़ों मा नि ह्वे विकास नि ह्वे विकास!
स्वामी कोष्यारी रै फिर तिवाड़ी रै
बाटा मा खड़ी विकास की गाड़ी रै
राजधानी गैरसैण कि भि नि रैई आस
ह्वेगे त्रास ....

नौनी नौन्याल एम0ए0 बी0ए0 कर्ना
नौकरियों का हाल जन्नी का तन्न
न त ल्योन्दा सि लाखडू पाणी न काटदा घास
ह्वेगे त्रास...

गाँव मा बाघ बणू मा आग रै
इन्नी सदानि पहाड़ियूँ कू भाग रै
कभि भ्वींचळ कभि पणगोला छ रोकणा साँस
ह्वेगे त्रास...

कविता

प्रसव-पीड़ा

Û l|'khy c|MkdkVh

छ्वटि ब्वारि
पैलि प्रसव का बगत
राति सींणदा
ब्वन लगि – (सासू तैं)
जी! हे जी!
ह्या सुणना छौं तुम?
बुनैई,
जबरि मी थैं पीड़ा उठलि ना,
ता तुम मिथै बिजाळि देयां।

अर सासू का भी
कतगै स्वीला खेयां रैंन
अपणै हथूंन निबट्यां रैंन

वींन भि तपाक सि बोलि–
हाँ मेरि ब्वारि
खूब बोलि तिन,
दा ब्वारि बुनै

मिन क्या बिजळणि तू?
जबरि त्वै पीड़ा उठलि
तू अपवी बिजाळि देलि
सर्‌रा गौं वळों थैंई।

आन्दोलनकारी

Û Mk0 xkfu;kG

जौंन त्याग करि
भूखा–तीसा रैं, गोळि खैं,
डंडा खैं, षहीद ह्वेगीं
बकै हर्चिगी भीड़–भाड़ मा
अर गुमनाम रैकि
मुष्किल से दाळ रोटि टिपणा छन
वूं दिनो द्‌यूं–द्‌यूं मा खड़ा तमषगीर
अजकाल नेता बण्यां छन सरकार बल
आन्दोलनकार्‌यों तै, तोहफा दीणी च

नौकरी लगाणी च
द्‌यखदु छौं मी बी
क्वी पैदा होलि इनि
माई कि लाल सरकार
जु दे सक्द नौकरी?

सूणि ले मेरि सरकार!
कै–कै तै देलि?

1994 मा
पहाड़ कु हर एक बच्चा
हर एक नौजवान
हर–एक बुजुर्ग
हर–एक नारी
छै, आन्दोलकारी

नै जमनो

Û ,e- ,l jkor

तै काका थैं देख भुली
कै जमानम यू
घाड़ा उंद ढुंगा डळदू
पुराणों जमना चलिगे
नया जमना मा
ढुंगा का बदल
स्ट्रा′ डल्णुच
ये घाड़म
जमनो–जमनो का
हेर–फेर चा भुली
जमना–जमना की बात।

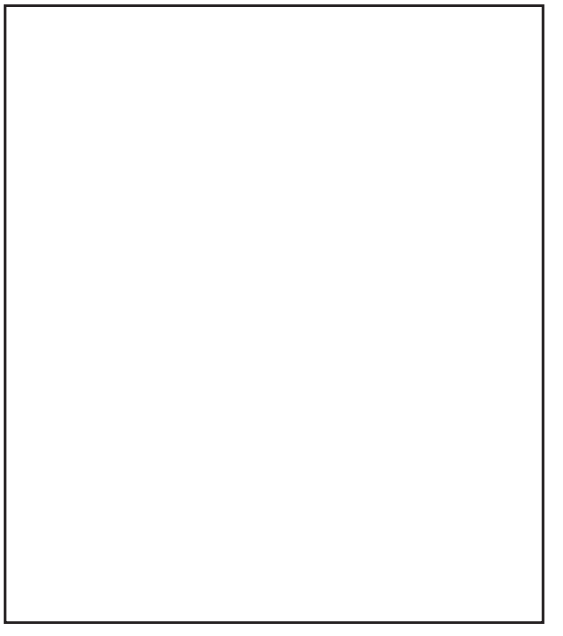

मोळा माधो

Û fo t ; d|ekj Þe/kjß

हम लेखि–पैढि सकदां
गोश्ठि–सम्मेलन कैरि सकदां
नै–नै अखबार–किताब छप्वै सकदां
पीएचडी कैरि सकदां
मोल़ कु माद्यो बणै सकदां
अपणी बोलि–भाशा पहाड़ु तै।
पण भै!
हाथ ज्वण्यां छन
वूं खरड़ा डांडौ–रौला कुमच्यरौं,
जै नि सकदां,
वख रै नि सकदां

समौण

Û l¡t ; l|Unfj ;ky

तेरु करळी आंख्यूं न् द्यखुणु
देखी झळकां बोग सरणू
सान्यूं मा दियां रैबार
आंख्यूं मा अणबुझा सवाल
मुट्ठी का प्याट घुचमी चिट्ठी
चिट्ठी का लिख्यां आखर
समौण च मैमु।

जु बेळी हमन दगड़ी कटी
छैलू बणै जौं डाल्यूं
धार म्ये करीं करार
बडुल्यूं मा दियां रैबार
बाटौं तेरी खुट्यूं का छापा
पोडू फर लिख्यूं नौं
समौण च मैमु।

मैं हिमालय बोलणू छऊं

Û Hkxorh izlkn ukfV;ky

मैं हिमालय बोलणू छऊं
क्य तुम तक म्यरि आवाज
पौंछणी च?
क्य बोले–बिंगेणू नी च?
चुचौं क्य ह्वे, तुमारि कंदुड्यों तैं,
म्यरि तरौं त तुम अज्यूं
बुड्या नि होये....
ल्या त हौर जोर करी बोल्दौं
(लरै–लरै कि बोल्द)
अरे भै! मैं हिमालय,
हिमालय बोलणू छऊं।

नि बींगि, अज्यूं बि, तब त
तुम न त उच–कदुड्या छवांए न बैरा
औड़ि कीटी तैं बण्यां– बैरा
अर वांको कारण?
कारण मैं बतौंदू,
गुस्सा नि ह्वेन–
म्यरा भुलों, म्यरि भुल्यों
यु कसूर तुम्हारो नी च–
कसूर च वीं रीत भौणो
ज्व तुमुन अपणै याले
अर मैतैं–तुमन भुलै याले।

'चल खुट्टि कौथिगै'
तुमतै आदत पड़गि
मण्डा, झंगोरो बाड़ि–
अब क्याप ह्वेगि
म्यरा छा जु –
वूं मन्ख्योंन, ऋशि–मुन्योन
म्यरू मान करे, सम्मान करे
वेद अर पुराणों मा
म्यरि स्तुति करे,
देवि द्यवतों न
म्यरि खुगलि खुजाए।
षूरवीर धीर अर
प्राक्रमी नर नार्यों न
म्यरा उज्जवल माल पर,
तिलक लगाये–
भक्तजन अर जाणगुरू
अपणा बदरी–केदारै खोज मा
मैं मु ऐन
हौंसिया अर रौंसिया
छोरा–छोर्यों न
अपणि यूं हिंवाळि
काठ्यों कि देल्यों मा
फूल सजैन, मांगळ लगैन
छोपती, छूड़ा, चौंफला
झुमैलो लगैन–
भड़ू का पंवाड़ा अर
द्यवतों का मण्डाण लगैन।

पर तुमुन क्य करे?
कख गै तुम्हारो–ओ
माधो सिंह भण्डारी को जोष...
गढ़ूं सुम्याळो रोश
कफ्फू चौहानै हुंकार
हरि हिडवाणै टंकार
रणू रौतै तलवारै धारै घात
तीलू रौतेली, रामी बौराण
जीतू बगड्वाळ, भरणा अर
रजूली–मालूषाही तैं तुम
भूल गयें–

नरसिंहै झोळ्यिळ, मछेन्द्रो चिमटा
अर–सिधवा–विदवै जादूगरी
बिसरै याळि तुमुन

तुमारि डांडि–कांठ्यों मा
सुर्ज उगद् अस्ते होंद
बाड़ि सगोड़यों मा
म्वारि मिमेणादन,
ग्वाठ्यारू मा–
गौड़ि–बाछि राम्दन

डालि–बोट्यों मा
हिलांस बासदन
पर तुम, तुम, कुज्याणि
कख छये द्यो द्यखणा।

अरे चुचौं निरा
अचेत पोड्यां
उठा, अज्यूं बि चेता
अफ तैं पछ्याणा
अपणि थाति देखा
अपणो इतिहास खोजा
अपणा गीत–बात
रीत–भौण निभा
म्यारि यूं–"अक्षत"
उदंकार चुलख्यों
तै नि झुका
मैं तुम्हारू छौं
तुम म्यरा छयें
मैं पछ्याणा।

म्यरि आवाज सूणा
हिंवाळि कांठ्यों का
सूर्ज छयें तुम–
बग्दि गदिन्यों का
गीत छयों तुम,
यूं गित्तु तैं
भौण द्या

एक ह्वेकि एक रा–
अपणि भाशा –अर
संस्कृति को–
मान करा, सम्मान करा,
यीं धर्ति को–
जैंका माटान –
तुम तैं–
'अ'–'आ' सिखाये
मनखि बणाये
वीं तैं नमन करा।

गारू

Û t;iky flg jkor

छिपड्डु दादा
हैल लगाणू छाई
वेका खुट फर
गारू बिनाई
वेल बंसुलु उठाई
गारू
बीचम बटे तोड़ द्याई
बल्दु ल ब्वाल
छिपड्डु दादा!
तुमुल यो क्य काई।

बल ओ म्यार खुट फर
किलै बिनाई

बल !
अब वो द्वी ह्वेगिन
पैलि ओ
इख्यटा छाई
गुस्सम
जोष नि थम्याई त
इन समझो कि
अनर्थ ह्वेग्याई!
अरे हाँ यार बल!
तुमुल मिथै
भौत बढ़िया बात बताई
पर जब काम बिगिड़ि ग्याई।

बल तुम गुस्स म इतगा छाई कि
हमुलु अपिणि ज्यान बचाई
बल चलो हिट ल्यूला
पुंगुड्डु अधा रैग्याई
उनि अब घाम बि
चमकण बैठग्याई।
रा ऽ रा ऽ रा ऽ
बू ऽ बू ऽ

छिटगा

गढ़वालि हाइकू एकादश

Û jkt’oj mfu;ky

मुंबई बटि
लिखी मिन हाइकू
भैजणूं छोवूं |1|

हम प्रवासी
परदेष बटि की
सेवा लगांदां |2|

जय बदरी
जय केदारनाथ
जय कैलाष |3|

हम उदास
धौर खौला की याद
चैसूंणी भात |4|

खेती पुंगड़ी
बौंण लखडु घास
पंदेरो पाणी |5|

भूत अछेरी
या देवता नचेली
जै कुल देवी |6|

बगदु पाणि
अर लखड़ू माटू
सुख्यां पहाड़ |7|

ब्वे की ममता
दादी को ककड़ाट
बुबा की बात |8|

कबि बडुळि
कबि हिच हिचकी
कबि पराज |9|

मन खुदेंणु
तन च बिदकुणूं
पैसा नी पास |10|

कबि त औंलू
गौं डांडी कांठी द्यखलू
मन कि आस |11|

गजल

Û cyoUr flg jkor

गाड मा सब बोगि जान्द,
वी नि ब्वगदू जै उ चान्द।

नौनु जाजकि सैर कर द,
बुब्बा म्वरिग्याइ खैरि खान्द।

जै थैं चाई वी नि राई,
बिराण वलु भि कनु बिरान्द।

बाटु देखी तनि बुढे गौं,
कभि त बैठा आन्द–जान्द।

छि भै सीण भि नि दीन्दू,
बुड्य रात भर कणान्द।

आगि म जैलि की दगड्या,
सूनु कुन्दन ह्वेई जान्द।

पारू रूणी रैन्द 'रौजा',
त्यारा गीत गान्द–गान्द।

नंनि कथा

राशिफल वळा पितजि

Û ckyUn cMkyk

'अखबार!' चिंघाड़ भ्वरण का दगड़ि अखबार वळन रबड़ बैंड से बंधी अखबार कि 'नळकि' उब्बु सुमेर का मकान की बालकनी जनै उछाळी। तब सुमेर अखबार खोलिकि कुरसी मा बैठिगे। अर सबसे पैलि अपणु राषिफल टटोळण लगिगे। असल मा अखबार लगाण कु मुख्य उद्देष्य ही यी छयू।

अगनै द्यखद–द्यखद वेन अपणि वृशराषि– जो सचमुच बल्द किसी अक्ल का मुताबिक तै पर फिट ही बैठदी छै–को दैनिक फल पैढ़ि की द्याख, ता वो यकदम ही गैंकणे ग्याय। साफ लिख्यूं छौं– पिताजी से मुलाकात होगी। अर सुमेर का पितजि थैं मोक्ष प्राप्त कर्यां आज पूरू एक युग गुजर गे छौ। त फेर य मुलाकत कनकैकि ह्वेली?

पितजि का दगड़ि मुलाकात अब द्वी ही तरीकौं से संभव ह्वे सकदि छै। यत कैभि दुर्घटना मा टुटिफुटि कि सुमेर अपणा पितजि का पास पौंछि जा या फिर वैका पितजि ही भूत बणिकि तैका समणी अचणचकि प्रकट ह्वे जावन। पण छै द्वी ही स्थिति खतरै वळि! न् सुमेर यीं दुन्या की मौजमस्ती छोड़िकी, अर न अपणा बीबी बच्चों थैं अनाथ बणै कि म्वरणु चाणुं छौ, अर न तैमा इतगा हिम्मत ही छई कि भूत का दगड़ि चाहे वो खुद तैकु सगु बुबा हि किलै नि हो– मुलाकात कैरि सकदू।

तब सुमेर दिमाग मा इनी ही उलझन थैं ल्हेकि अपणा काम पर जाण लैगि। संयोगवष वैथैं रस्ता मा उल्लू, गध ाा अर सूअर दिखेनी। सबि विषिश्ठ भूतु–कि तरौं पितजि कु भूत कै भी रूप मा दर्षन दे सकदू छौ। परंतु गाल्यूं का माध्यम से ख्याति प्राप्त इना 'पितज्यूं' का दिखेण से पैलि, कैन भी सुमेर थें वूं मगै कै से भी, 'पिता कू रिष्ता ज्वड़ण वळि' क्वी गाळि नि दे छई। यां से जाहिर छयू कि राषिफल कु असर अभी खतम नि ह्वे छौ। अर पितजि से मुलाकात षाम तक कै भी वक्त ह्वै सकदी छै। तब सड़क मा हर पहियों वळि गाड़ी सुमेर थैं दुर्घटना कू पैगाम ल्हांदि नजर आण लैगि। वूंका प्रकट हूंदै सुमेर सड़क छोड़िकि फुंडु कच्चा मा उतरि जाणू छयू। दुर्घटना मा कचूमर बणि की म्वरूणु वैथैं कतई मंजूर नि छौ। भूत दगड़ि ता चलो कै तरह निबटे भी सकेंदु छौ।

षाम होण लगि गे छै। तब वापसी मा घर भी नजदीक ऐगे छौ। धन्यवाद भगवान खुण कि अभी तक क्वी दुर्घटना नि ह्वे, अर न भूत का दर्षन !

'चलो कटे ग्याय दिन'– स्वचण लग्यूं छौ सुमेर – जरूरी नी च कि राषिफल हमेषा ही सच साबित ह्वे जाव। भलो पितजि से मुलाकात होलि मेरी, अर वो भी अब? जब म्यारा पितजि स्वर्ग मा मस्ती करणा होला अर मी भी खुद कतगै बच्चों कु पितजि बण्यूं छौ! सब झूठ च। यो राषिफल वूं ही लोगु पर सही खप सकद जौं का पितजि अभी भौतिकरूप से संडमुसंड मौजूद होवन। तभी –

"ओय मोतियां वाले! परे हट, पुत्तर ! ऐक्सीडेंट करा के तैनू की अस्पताल जाणा? हुण मैनू भी एंड़ी बुढ़ापे दी उम्र बिच उत्थे जेल दी हवा खलाण चांदा ऐ..... ।" अनपेक्षित ही इनु सूणि–बिदकी कै सुमेर सड़क बटे उत्पड़े की झट किनर हटिगे। देखदू क्या च कि एक लहीम–सहीम बुढय 'खालसा जी' आंखि घुर्यांद, साइकिल का हैंडल थैं घुमैकि, सुमेर थैं बालबाल बचाई, सर्प–गति मा अगनै निकळी गे छा तभी अपण वास्ता वूं सरदार जी कु ब्वल्यूं 'पुत्तर' षब्द वैथैं अपण दिमाग मा, कार की पिछली लाल बत्ती की तरह, टिम्टिम, टिमटिमांदु महसूस होण लगि– 'पुत्तर', यानी पुत्र! ... सुमेर 'पुत्र' तब सरदार जी रिष्ता मा वैका क्या ह्वाया? "पितजि ह्वाय, पितजि!" अपणा आप ही सुमेर का दिमाग मा जवाब भी, जन ब्वदी फाळ मारिकि झट्–देकि ऐगि। इनु करारू सच्चू उत्तर पांदै सुमेर की आंख्यूं मा प्यार की चमक ऐगि। मतलब राषिफल खालि नि गायू। पितजि से मुलाकात आखिर ह्वे ही ग्याय!

सुमेरन तब चैन की लंबी सांस खैंच द्या। पण वैथैं यीं बात कु अफसोस होण बैठगे छौ कि घबराट मा वैन, सरदार जी रूपी राषिफल वाळा अपणा पितजि खुण 'सत श्री अकाल' भी नि बोले! तब श्रद्धा अर प्रेम का आंसुन तर हुयां आंखौं से सुमेरन फिर एक दा अगनै द्याख– दूर मोड़ पर नजर से ओझल होंद साइकिल पर सवार, पितजि की नीली ठांटि अबि भी झलकणी छई

श्रद्धांजलि

स्वांग सम्राट ललित मोहन थपलियाल

Û fgek'k 'kek

ललितमोहन थपलियाल जी–भग्यान ह्वेगेन, यानी एक जुग को अंत, थपलियालौ मोरण याने गढ़वाळी स्वांग मा एक क्रांति ल्हाण वळै मिर्तु

डॉ0 षिवानंद नौटियाल भग्यान ललित मोहन थपलियाळा बड़ा प्रषंसक छया अर वूंको बुलण छौ बल लोकनाट्य अर नाटकूं मा ललित मोहन थपलियालौ काम सबसे अधिक सराहनीय छ।

भग्यान ललित मोहन थपलियाल को जन्म 1920 मा श्रीकोट, खातस्यूं पौड़ी गढ़वाल मा एक खांद पींद घौर मा ह्वे। 1942 मा इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से अंग्रेजी मा एम.ए. करणा बाद 'पायनीयर' (लखनऊ) इलाहाबाद मा संवाददाता बणिन अर इन बुल्दन बल ऊंका रिर्पोटिंग मा कटांगी भाशा पैली बटे छै।

फिर 'लीडर' दैनिक अंग्रेजी पत्र मा उपसंपादक बणिन, 1945 मा नेषनल हेराल्ड का संपादक मंडल का सदस्य ह्वेकि पत्रकारिता मा नया–नया विषयूं तैं पढ़दरों का समिणि ल्हाण मा सबसे अग्वाड़ी रैन। भाशा मा हौंस अर तिड़का ललित मोहन जी की एक खासियत छे। ललित जी का विशय खुज्याणौ तरीकौं से प्रभावित ह्वेक दिल्ली को प्रसिद्ध अंग्रेजी अखबार 'हिन्दुस्तान टाइम्स का डायरेक्टरूं ल ललित थपलियाल जी तैं दिल्ली भट्याई अर 1953 मा थपलियाल जी 'डेली हिंदुस्तान टाइम्स' का उपसंपादक बणिकि दिल्ली ऐगिन। 1955 मा थपलियाल जी वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेषन (WHO) का साउथ एषियन क्षेत्र मा असिस्टेंट इनफॉर्मेषन ऑफिसर बणिन अर 1964 मा वूंकी पदोन्नति ह्वे अर सूचना अधिकारी हैसियत से न्यूआर्क अर जेनेवा प्रवास मा रैन। 1980 मा रिटायर ह्वेन अर 1982 मा भारत बौड़िक ऐन।

थपलियाल जी की रूचि नाटकूं तरफां छ्वटु बटे छयी। हिंदी मा वूंका भौत नाटक प्रकाषित ह्वेन, काला नाटक, कल्पना के खेल, विद्रोह के प्रतीक, दो यात्री, ब्राह्मण की बेटी, अलग–अलग रासो, चिमटे वाले बाबा, हम सफर, इम्तहान की तैयारी, जिस दिन चोर आया, अंछरियों का तालाब, सुबह होती है–षाम होती है, छुट्टी का दिन, सैंड्रीला, काका बाबू, धाकड़ पार्टी, लाडो रानी अर झमेला यूंका लिख्यां नाटक छन जु मंचित ह्वेन।

जेनेवा मा थपलियाल जी ल 'हिंदी भाशी नाट्य मंडली' की स्थापना करी अर तीन पूरा नाटक अर कथगा इ छ्वटा नाटकूं मंचन करी, दिल्ली मा गढ़वाळी स्वांगू विकासा बान बणी संस्था 'गढ़वाळ संगीत नाटक समाज' का संस्थापकूं मा एक छया या संस्था पैथरां 'जांगर' का नाम से जाण्ये ग्ये।

भग्यान ललित मोहन थपलियाल तैं श्रद्धांजली दीण ह्वावु त 'खाडु लापता' स्वांग से पैलाक गढ़वाळी स्वांग उर 'खाडु लापता' का मंचन का उपरांत गढ़वाळी स्वांग का बारा मा बिरतांत दीण जरोरी च।

खाडुलापता से पैलाक स्वांग –

गढ़वाळ मा स्वांग विधा भौत पुराणी विधा च। गढ़वाळ मा वादी स्वांग खिल्दा छया त गीतूं मैनौं मा जनानी बि सामाजिक स्वांग खिल्दा छया।

आधुनिक नाटकूं हिसाब से पैलो नाम च भवानी दत्त थपलियाल जी को, जौंन 1914 मा 'प्रल्हाद' नाटक लेखी पण मंचन 1930 मा ही ह्वे साकु। 1912 मा ही भवानी दत्त जी न 'जय विजय' नाटक बि लेखी छौ।

टिहरी (गढ़वाल) मा 1921 मा एक नाटक प्रेक्षाग्रह बि चिणे ग्ये अर इख नाटक खिले गैन।

दुसरो गढ़वाळी स्वांगौ नाम छौ "पांखु" जैका लेखक 'चार दगड़्या' छया। 1932 मा विष्वम्बर दत्त उनियालौ स्वांग 'बसंती' को मंचन ह्वे।

स्वतंत्रता आंदोलन का समै पर भगवती प्रसाद पांथरी का 'अधपतन' अर 'भूतों का खोह' नाटक प्रसिद्ध ह्वेन।

षहरूं भीड़ जुड़ाण वळु पैलो गढ़वाळी नाटकौ नाम च– जीत सिंह नेगी लिख्यूं स्वांग 'भारी भूल', ये स्वांगल दिल्ली, देहरादून अर मुम्बई जन षहरूं मा खूब धधकारों मचै

खाडू लापता :– पैल थपलियाल जी हिंदी मा नाटक लिखदा छया, डॉ0 सुधारानी का मुताबिक 'भारी भूल' की भीड़ देखिक ललित मोहन जी को ड्यार–बौड़ाई ह्वे अर थपलियाल जी गढ़वाळी स्वांग लिखण बिसे गेन। वूंल गढ़वाळी मा 'खाडू लापता', 'घर जवैं', 'चमत्कार', 'अछेर्यू ताल अर एकीकरण' नाटक लेखिन, 'खाडू लापता' गढ़वाळी

स्वांग मा एक मील–पत्थर च। मुम्बई, दिल्ली, देहरादून, उत्तरकाषी, कोटद्वार, श्रीनगर, सबि जगा ये नाटकौ मंचन ह्वे अर दिखनेरूं तैं सब्बि जगा पसंद आई। घर जवैं अर अछेर्यूं ताल को मंचन भी भौत जगा ह्वे पण मुम्बई का गढ़वाळी रंगमंचकर्मी दिनेष भारद्वाज जी को बुलण च बल दषकुं से ज्वा बड़ै, प्रषंसा 'खाडू लापता' तैं मील वो गढ़वाळी का कै बि हैंका नाटक तैं नि मिले। मुम्बई का हैंका गढ़वाळी रंगकर्मी रमण मोहन कुकरेती जी को बुलण च बल 'खाडू लापता' गढ़वाळी को 'षोले' च।

रमण मोहन कुकरेती जी ही को बुलण च बल प्रवासी गढ़वाळ्यूं तैं स्वांग दिखणौ बिगरौ आई त 'खाडू लापता' से ही आई। 'खाडू लापता' की कथा मा रस्याण च अर एक सस्पेंस च जु दषकूं तैं अपण सीट पर पलाबंद करीक रखदु। अर सरल कथा, नाटकीयता, सामाजिक स्थितियां, दैनिक जीवन, कल्पना, राजनीति, द्वंद, चरम सीमा, चरबरा संवाद, बिंगण लैक बरबरी हंसादी भाशा षैली, दृश्य विध ाान, घटनाऊं मा गतिषीलता, पात्रुंको अपण चरित्र तैं कार्यकलापुं अर डायलौगुं से स्वतः चरित्र चित्रण करणौ तरीका, 'प्रसादमयी–हास्य विनोदमयी–व्यंग्य मयी' षैल्यूं मिळ्वाक एक नाटक तैं दर्षकूं चेहता बणै दींद। कहानी को मूल मा गंभीरता च पण ढंग–ढाळ हंसदेरी होण से ये नाटक की रिपीट वैल्यू भौत च।

थपलियाल जी स्वयं भी सूत्रधार का रूप मा नाटकूं मा हिस्सा लींदा छया।

खाडू लापता उपरांत

हालांकि थपलियाल जी से पैल अबोध बंधु बहुगुणा जील बि नाटक लेखिन पण मचंन को हिसाब से 'खाडू लापता' की सफलता को परांत ही दामोदर दत्त थपलियाल ('मनसी' तथा 'औंसी–रात'), डॉ0 पुरुशोत्तम डोभाल (1959– 'बुरांस' अर 'बिंदरा'), डॉ0 षिवानंद नौटियाल (बौण का फूल), डॉ0 हरिदत्त भट्ट षैलेष ('नौबत'), डॉ0 चातक (जंगली फूल), गिरधारी लाल कंकाल (इनामिचंद) विरेन्द्र रतूड़ी (एक नै अगन), किषोर घिल्डियाल (रग–ठग, कीड़ू–ब्वे, टूणो जनम), राजेन्द्र धस्माना (अर्द्ध ग्रामेष्वर, जंकजोड़), स्वरूप ढ़ौंडियाल (मंगतू बौळ्या, अदालत), चिंतामणी बड़थ्वाल (टिंचरी) मोहन बिश्ट (औडुळ), कन्हैयालाल डंडरियाल (स्वयंम्बर, सपूत) मोहन लाल डंडरियाल, दिनेष पहाड़ी, पारेष्वर गौंड़, विषाल मणी षर्मा (1955 मा बालक ध्रुव), श्रीधर जमलोकी (सीता परित्याग), सुरेन्द्र सिंह रावत (अनपढ़, कन्या बेची, बेमान नौकर), भगवती प्रसाद चंदोला(आज आळ्स छ्वाड़ो) प्र. मलाल भट्ट (मृत्यु की चाटी), ललित केषवान (हरि हिंडवाण) उमा कांत बलूणी (बांजि गौड़ी) घनषाला आदि नाटककारूं की बात होण षुरू ह्वे।

गढ़वाळी मा 'प्रल्हाद' नाटक पैलो लिख्यूं नाटक च, 'भारी भूल','स्वतंत्रता परांत भीड़ जनक नाटक छ त ललित मोहन थपलियाल जी को 'खाडू लापता' से जु प्रवासी नौजवान गढ़वाळी नि बोलि सकदा छया वूंतैं बि गढ़वाळी नाटक दिखण मा रौंस आई यूं नवजवनूं की बि समझ मा आयी कि गढ़वाळी स्वांगूं मा एक स्टैंडर्ड च।

गढ़वाळी नाटक मंचन मा बि गेड़िन खर्च करण पोड़ल यो बि 'खाडू लापता' से ही गढ़वाळ्यूंल सीख। अर यू मि नि छौ बुलणु। यी बचन छन दिनेष भारद्वाज जी का

थपलियाल जी गढ़वाळी नाटककारूं मा सूरज छन अर जब तलक गढ़वाळी नाटक खिले जाला तब तलक ये सरस्वती पुत्र को नाम सदा ही स्मरणीय रालु।

भग्यान थपलियाल जी तैं असली श्रृद्धांजली तबि ह्वे सकद जब गढ़वाळी नाटक जादा से जादा मंचन होण

व्यंग्य

अतिरिक्त योग्यता

Û gjh'k t|;ky ^d|Vy

हम देवभूमि का नाग–रिक्ख छां। हम मा अर दुन्या का लोगुं मा फरक च। दुन्या का आदिम छन त हम देवभूमि का द्यबता छां। जब तक दुन्या का द्यबता बणला तब तक हमल द्यबतौं कऽ बि द्यबता बण जाण। हमरू त उणि बि परमोषन च।

गणत करे जा त यि विषेश गुण हमरि अतिरिक्त योग्यता का छन। कै बि क्षेत्र मा योग्यतौं का विषेश चुरमण हासिल करूणु हि अतिरिक्त योग्यता च।

उदाहरण क तौर फर अगर आप फर्जी कुटलजड़ा ब्यचदा– ब्यचदा इमारती लकड़ी का थोक व्यापारी बण ग्यो त या आपकि अतिरिक्त योग्यता च।

या यन्न समझल्यों कि अगर आप कैकु ब्यो मा नचद दफ कै फर क्वीना कि घपाग मार दिंदौ त यऽ घपाग आपकि अतिरिक्त योग्यता कि सम्मानित पछ्याण च।

हम लोगुं का बि अलग–अलग कार्यक्षेत्र छन यूं कार्यक्षेत्रों मा हम विषेश तरक्की हासिल करणा छां।

नामकरण क क्षेत्र मा यख विषेश प्रयोग चलणा छन। यख अंग्वठा छाप आदिम कु नाम षास्त्री ह्वै जांद, सबसे गरीब आदिम खुणै लोग सेठजी बोल दिंदन त कंगाल आदिम यख रायसाब बण जांद। म्वरयूं आदिम यख भग्यान ह्वै जांद त बच्यां खुणै लोग करमकोढ़ी बोल दिंदन।

कृशि क्षेत्र मा हमरा हळ्या स्पेषलिस्टौं मा भितर डमर्याण ाा कु अर भैर जोळ लगाण कु विषेश ऐक्सपीरियंस च। बगत कु बगत काँच कि गिलास कि 'चीज' हौरि कैखुणै मील नि मील पर हळ्या खुणैकि जरूर चैणी च। फसलपात मा कुणजा बिराजमान पुंगड़ मा हिटुणु हमरू धरम च, ध ाण कन्न म हमतैं षरम च किलैकि मन्याडरौं ल हमरू कीसा गरम च।

हमरू उत्तराखण्ड मा बक्या एंड जगरी ऐसोषियेसन मौ अनुमान जागर लगाणा छन। फलस्वरूप जगरी टुंड, ध ुपणु फुण्ड अर डौड्या ब्रेकडान्स कैरिकि इंगलिष टौकिंग कना छन। अपार हर्श की बात च कि हमरा डौंडया नर्सिंग आइसाइड फरकैकि इन्टरनेषनल लगवेज ब्वन्ना छन।

चकड़ैतु कि कृपा से हमरू क्रिटिसाइज कु ऐरिया भौत विस्तृत ह्वै ग्याइ। हम क्रिटिसाइजकर्तो का द्वी उपयोगी स्थान छन, चुल्लु अर गुठ्यार का चलचला ढुंगा। एक सुझाव देणू छौं कि येकी अलग से एक ब्रॉंच बणये जा ज्यामा ओलंपिक स्तर फर क्रिटिसाइज कम्पटीषन करये जा। जैकु षीर्शक ह्वालु अन्तर्राश्ट्रीय च्योलामार, टंगड़ी खैंच प्रतियोगिता जैमा सर्वोच्च खिलाड़ी थे चुर्की मैडलमैन' घोशित करे जालु।

आप बि कई यन्न प्रकार की अतिरिक्त योग्यता वळि प्रतिभा बण सकदन अगर आप मा निम्नलिखित एक दर्जन सदगुणों में से क्वी बि एक गुण च–

1– थमळ न् मुंडै करण कि कला
2– हौर्यूं कु खाणु अर अपुडु बचाणु
3– चुंगनि देकि बौगु ह्वे जाणु
4– उकाळ काटिकि सरपट होणु।
5– भैर सिगरेट पेणि अर भितर टुकड़ि पेणि।
6– बासी खाणकु खाकि देळिम आकि सगत डकार मरूणु।
7– मुखड़ि देखिकी टुकड़ि करणि

नरग कोट

(गढवाळि साहित्य का मूर्धन्य कवि कन्हैयालाल डंडरियाल जी की कतनै उत्कृष्ट रचनाओं मा बटे एक कृति छ – "बागी उप्पन की लड़ै" तंगतंगा हालतुं का चलदा य रचना अभि तक अप्रकाशित छ। या उत्कृष्ट काव्य कृति लोगों का समणि आवा यीं कोशिश मा हम डंडरियाल जी की यीं कृति तैं श्रृंखलाओं मा प्रकाशित कर्ना छवां – सं.)

xrkd cVh vxu

वीं गोठा का हैंक तरफ छौ,
अन्ध अषिक्षौ एक सिमांद।
जाति वाद को जोर छयो जख,
बड़ि अदिमै की छई सड़ाँद।।

खिंदिन घात, ल्वैछड़ा दियेंदा,
रोज उर्यौंदा जखा अठ्वाड़।
नाटै भूमी कैकी जड़हंत्या,
करदी छै जख रोज अन्याड़।।

बिथ्या, सैद, छैळ या छिपरा,
चलदी बाउन जखा बयाळ।
मरदि फटगतळि जटी उपाड़ी,
सैणु उजाड़ी करदी भ्याळ।।

हिंसा, द्वैश, भरम अर भय छा,
एक हैंका की लुचणा खाल।
परबुद्धि जख कतिगि कुरीति,
कटक, कुटेव छया खुषहाळ।।

बजद नगांडा नांग भूक का,
भाग्य जखा छौ बरख लगांदू।
उकळा तकळ ग्रह कुंडली मा,
ऋण अर ब्याज त्र मवसि डुबांदु।।

मच्छर, अट्टा, सरसु, डांसु की,
कतगै पल्टन छई अपार।
छौ अधिनायक उप्पन सब्यूं को,
योद्धा वीर दलेदर राज।।

एक मेल छौ एक राय छै,
छयो प्रेम चार्यूं का बीच।
कनकै चबट करौं गढ़वाल़ै,
यायी सबुका मन म डटीं च।।

उप्पन को गोठ मा आणो :–

एक दिन छै इन दैव योग से,
ऐगैं गोठ म, उप्पन साब।
चुटै दिने च्यॉं पल्ला गोठा,
कै दे सबु की निंद खराब।।

जतगा छा वख ग्वठळा गोठम्,
तौंका उड़ि गैं डारौ होश,
गिरदा पड़दा लमिड़ि गईं कति,
कतगै ह्वे गैं निचट बिहोश।।

बखरा चळकी, गोरु बिदिकि गैं,
ढ्यबरौं को गिरमट ह्वे ग्याय।
थर–थर कौंपी डारौ भैंसा,
ज्यूड़ा, कीला तोड़ी द्याय।।

हलचल देखी सरी गोठ मा,
मिन्द टुटी ऐ बागी होश।
सिंगु न मारी गोरू धिरैना,
गयो सॉंड मा कैरी रोष।।

मेजर खाडू करनल ब्वक्ट्या,
फालिन ह्वे गैं बल्द जवान।
करुणों चैंदा क्या अब हम तैं,
सुणिल्यो दगड़्यो खोली कान।।

अपणी–अपणी सैनौ तैं तुम,
कै द्यो सबी जैकि हुस्यार।
करा सुरक्षा सरी गोठ की,
खै जौ कुई कखिम नी मार।।

कै की सबी बन्दबस फेरे,
चौतरफा से घेरी गोठ।
जैकि अचणचकि उप्पन फर तब,
बागि न काये सिंगु कि चोट।।

उप्पन खैकी मार बागि की,
तैल्या मींडा पोड़ी ग्याय।
झटपट उठि कै धूळो झाड़ी,
बागि क समणे पौंछा जाय।।

आखिर दा

भैर गरीब पर भितर मालामाल-कवि डंडर्याळ

Û cYyHk MkHkky

जब मि अलिगंज म छौ डंडर्याल जि आंद छा। वूंकि दुसरि कविता त सुणद्वै छौ, पर सत्यनारैणै कथऽ त भौत पसन्द छै। तीन–तीन दफऽ सुणना बाद बि तब्यत् नि भ्वरींद छै। उत्तराखण्ड क जन–जीवन अर वातावरण पर जु पकड़ ये कवि कि छै व भौत कम लेखकु क पास होलि, इन म्यरू स्वचणु च।

डंडर्याल जि रूंद–हंसद चलि गैन। पर भारि संघर्शु क बीच गढ़वळि साहित्य अर बोळि म जु बि दे गैनि वो वूंका दगड़ि–दगड़ि अमर ह्वैगै। डंडर्याल जि नांगा खुटो चलदऽ छा।

इनु स्वाभिमानी अर त्यागि आदिम छौ डंडर्याल। सचऽ मानौं म लेखक, सन्त अर महापुरुषों का लक्षण यीं छन कि वो भैर बटि गरीब पर भितर क मालामाल होंदन!

एकदिन मिन बोलि कि यार डंडर्याल जि! तुम गढ़वळि म इथगा अच्छु लिखदा त क्या हिन्दि मा नि लेखि सकदऽ ?..... त बोलि कि हम जैं बोलि–भाषऽ मा रच्यां–पच्यां छां, वांम लिखणम् जु मजऽ च वो हिन्दिम् नि ह्वै सकदु। हर बोलि–भाषऽ कि अपणि खूबि छन्। गढ़वाळि षब्दु कि बात छोड़ द्या, यख स्वरू कु उच्चारण यानि (ढौळ) ई अपणं–आप म भौत कुछ समझै जांद। य बात हिन्दिम कख च।

वूंकि य बात गौर कन्न लैक च कि लोक–कला साहित्य आदि कु स्वाद सिरफ षब्दु म नी च, बल्कि षब्दु का दगड़ स्वरू कु उच्चारण (ढौळ) जांदऽ काम कै जांद।

स्वर अर षब्दु कि गैरि पछ्याण डंडर्याल जि कि तरां गढ़वाला कवि कंकाल, भजन सिंह "सिंह", महन्त योगेन्द्रपुरी, भवानी दत्त थपल्याल अर अबोधबन्धु बहुगुणा कि रचनौं म बि मिल जांद।

गढ़वलि क्यऽ.....सब्बि भाषों का प्रेमि–पाठकु से म्यरु एकी निवेदन रैंद कि जब तक लेखक–कलाकार लोग बच्यां छन्। वूंकु पूरी तरां आदर–सम्मान करे जाव। म्वरणऽ का षोकसभा, सम्मान, गुणगान आदि कि परम्परऽ भौत पुरणि ह्वैगे। हिन्दि क कै कबि कि पंक्ति छन् –

जब गीतकार मर गया

चांद रोने आया,

चांदनी मचलने लगी कफन बन जाने को

मलयानिल ने कन्धों पर उठा भेजा,

श्रीखंड चन्दन जलाने को।

म्वरणऽ का बाद कुछ बि करो, बेकार च। बच्यां म करल्य त कम से कम वैतैं भारि खुषि होलि। उत्साह मिललु अर जब जालु त भौत–कुछ देकि जालु। डंडर्याल तैं लिखणैं सुविधा मिलदि अर कुछ साल हौरि रै जांदऽ त भौत–कुछ दे सकद छा, पर जब नि राय त वे कवि आत्मा कि षान्ति का वास्तऽ प्रार्थना रूप मा अपणि श्रद्धांजलि अर्पित करदू।

लोक बारखड़ी

iLrfr % fnXiky flg uxh

क – कंचनी डाळी कु वासुनि कन।
ख– खाते पीते राम भजन।
ग– गंगा जी मा स्नान कन।
घ– घरों–घरों की बात नि सुण।
ङ्– गंगा जी गन्दी नि कन।
च–चंचल नारी कू संग नि कन।
छ– छलिया मुख की बात नि सुण।
ज– जंगलू मा वासु नि रैण।
झ– झूठि मुटी बात नि करण।
ञ– येनी बात कैमू नि बोलण।
ट– टम्का पैस गांठि मा रखण।
ठ– ठगा आदिम दगड़ी सौदा नि कन।
ड– डगड्यनी ढुंगी मा खुटो नि रखण।
ढ– ढवाली बात कभी नि कन।
ण– णखदि नरमी कु वास नि कन।
त– ताता रोस मा झगड़ा नि कन।
थ– थता थुमा सब दगड़ी कन।
द– दया धर्म सदा रखण।
ध– धरती माता की सेवा करण।
न– नकली बात कभी नि बोन।
प– पढ़ण–लेखण पर ध्यान देण।
फ– फंचा आदिम की बात सुण।
ब–बांगी लकड़ी कांधी मा नि रखण।
भ– भरियाँ भवन की चोरी नि कन।
म– मंगण आदिमू की बात नि सुण।
य– यनि–यनि बात मन मा रखण।
र– राम नाम सदा भजण।
ल– लंगी लंगी डाळी कू टुक नि काटण।
व– वखला मा नारियों दगड़ी बात नि कन।
ह– हल लगोण मा सरम नि कन।
स– साधु, संन्तो की सेवा करण।
ष– षनातन धर्म की सेवा करण।
श– सासू ससुर की सेवा कन।
क्ष– अक्षरों पर ध्यान देण।
त्र– त्रणी तार भगवान करद।
ज्ञा– ज्ञानी यानी एकी तरह बणण।

पर्यटन

• पर्यटन के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए राज्य को पहली बार देष का सर्वोच्च पर्यटन पुरस्कार 'नेषनल टूरिज्म एवार्ड– 2004' प्रदान किया गया।

• उत्तरांचल पर्यटन विकास परिशद् को सर्वोत्तम बोर्ड के लिए गैलीलियों एक्सप्रेस ट्रेवल एण्ड टूरिज्म अवार्ड में प्रथम स्थान।

• राज्य में पर्यटन मुख्य सकल घरेलू उत्पाद के रूप से चिन्हित। संवैधानिक पर्यटन विकास परिशद् स्थापित। मण्डल स्तर पर पर्यटन हेतु कार्यदल गठित, 13 जिलास्तरीय पर्यटन कार्यालय क्रियान्वित।

• तीर्थाटन, साहसिक पर्यटन, कला एवं संस्कृति पर्यटन, इको पर्यटन पर विषेश कमेटियाँ गठित। अवस्थापना विकास के अन्तर्गत विभिन्न कार्यों के लिए 150 करोड़ रूपये के पूंजी निवेष से 300 योजनाओं पर कार्य प्रगति पर 19 रज्जू मार्ग प्रस्तावित।

• पर्यटकों को उच्च स्तर की मार्गीय सुविधा उपलब्ध कराने हेतु प्रथम चरण में राज्य में 44 स्थलों में पर्यटन सूचना केन्द्र स्थापित करने का कार्य किया जा रहा है।

• निजी क्षेत्र की भागीदारी सुनिष्चित करने हेतु अनूठी रणनीति तैयार। पर्यटन महायोजना पर आधारित रू0 2000 करोड़ के पूंजी निवेष से ठोस पर्यटन योजनाओं की एक–एक श्रृंखला तैयार।

• वृहद पर्यटन केन्द्रो (हवों) की स्थापना जिसके अन्तर्गत रामनगर के निकट 802 एकड़ भूमि पर लगभग 500 करोड़ की 'कार्बेट कन्ट्री' नामक इको सिटी, मसूरी में सर जार्ज एवरेस्ट में 200 एकड़ भूमि पर इको पार्क व रिपोर्ट, टिहरी डाम एक पर्यटन गंतव्य। दयारा बुग्याल, उत्तरकाषी में अन्तर्राश्ट्रीय स्तर का एक नवीन सी रिसार्ट।
• पर्यटन परिपथों का विकास, जिसमें हरिद्वार–ऋशिकेष एक ग्रेट ग्रीन विस्टा तथा यू.एन.डी.पी. की सहायतासे गोविन्दघाट–घांघरिया –फूलों की घाटी–हेमकुण्ड साहिब और अल्मोड़ा–जागेष्वर–कौसानी व बिन्सर व पौड़ी–खिर्सू–लैन्सडाउन तथा पिथौरागढ़–मुन्स्यारी आदि है।

• चारधाम परिपथ के विकास पर विषेश बल, जिसके अन्तर्गत चारधाम विकास परिशद गठित तथा 212 करोड़ रूपये के पूंजी निवेष से महायोजना तैयार। इसी प्रकार हेमकुण्ड साहिब तक हैलीकॉप्टर सेवा प्रस्तावित।

• देहरादून एवं अल्मोड़ में राश्ट्रीय स्तर के कला व पर्यटन मेलों का आयोजन। अल्मोड़ा में उदय षंकर नृत्य एवं संगीत अकादमी की स्थापना पर कार्य जारी। इस हेतु सात करोड़ रूपये की धनराषि प्राप्त। जागेष्वर ध ाम व पाताल भुवनेष्वर का विकास प्रगति पर।

• देहरादून में राश्ट्रीय स्तर के होटल मैनेजमेंट संस्थान की स्थापना। देहरादून व अल्मोड़ा में स्थित राज्य स्तरीय होटल मैनेजमेंट संस्थानों का सुदृढ़ीकरण व उच्चीकरण। भारत पर्यटन विकास निगम के सहयोग से कुली, गाईड, ढाबा, मालिकों व राज्य के पर्यटन निगमों के कर्मचारियों हेतु प्रषिक्षण कार्यक्रम।

• पर्यटन में स्थानीय जन–समुदाय की सहभागिता के उद्देष्य से वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली पर्यटन स्वरोजगार योजना के अन्तर्गत निजी उद्यमियों को पर्यटन सम्बन्धी विभिन्न गतिविधियों के लिए व्यावसायिक बैकों से ऋण लेकर रू0 10.00 लाख तक किये गये पूंजी निवेष पर 20 प्रतिषत किन्तु अधिकतम रू0 2.00 लाख की धनराषि राज–सहायता के रूप में सुलभ कराई जा रही है।

• इस योजना के अन्तर्गरत 215 परियोजनायें स्वीकृत की जा चुकी है, जिसमें पाँच सौ से अधिक व्यक्तियों को चालीस करोड़ रूपये बैक ऋण व अनुदान स्वीकृत किए गए है। जिन पर लगभग 10 करोड़ रूपये का बैंक ऋण व 2.5 करोड रूपये का सरकारी अनुदान अवमुक्त किया जा चुका है। इस योजना में आने वाले पाँच वर्शों में 5000 लोगो को लाभान्वित करते हुए 400 करोड़ रू0 की वित्तीय सहायता प्रदान की जायेंगी।

DOON INTERNATIONAL SCHOOL
(DAY & RESIDENTIAL)
PARI MAHAL 32, CURZON ROAD
DEHRADUN (UA) INDIA
Phone :- 0315-28491,23892

A school having a touch of class, beautiful building, the best of Environment and play fields for various games and sports. The school will groom the students to become healthy and confident with an International outlool.

(a) Day & Residential with separate hostels for Boys & Girls with modern amenities
(b) Highly qualified and experienced staff.
(c) Quality education, thorough modern teaching aids
(d) One class to be added each year.
(e) Academic session April to March

Registration/ Admission Open
from NURSERY to CLASS VII
(Pospectus priced at Rs. 50/- IC)